

कैनेडा से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका

Year 20, Issue 80

Oct.-Dec., 2023

# वसुधा

**VASUDHA A CANADIAN PUBLICATION**

**FOUNDER-EDITOR-PUBLISHER : Dr. SNEH THAKORE  
AWARDED BY THE PRESIDENT OF INDIA**

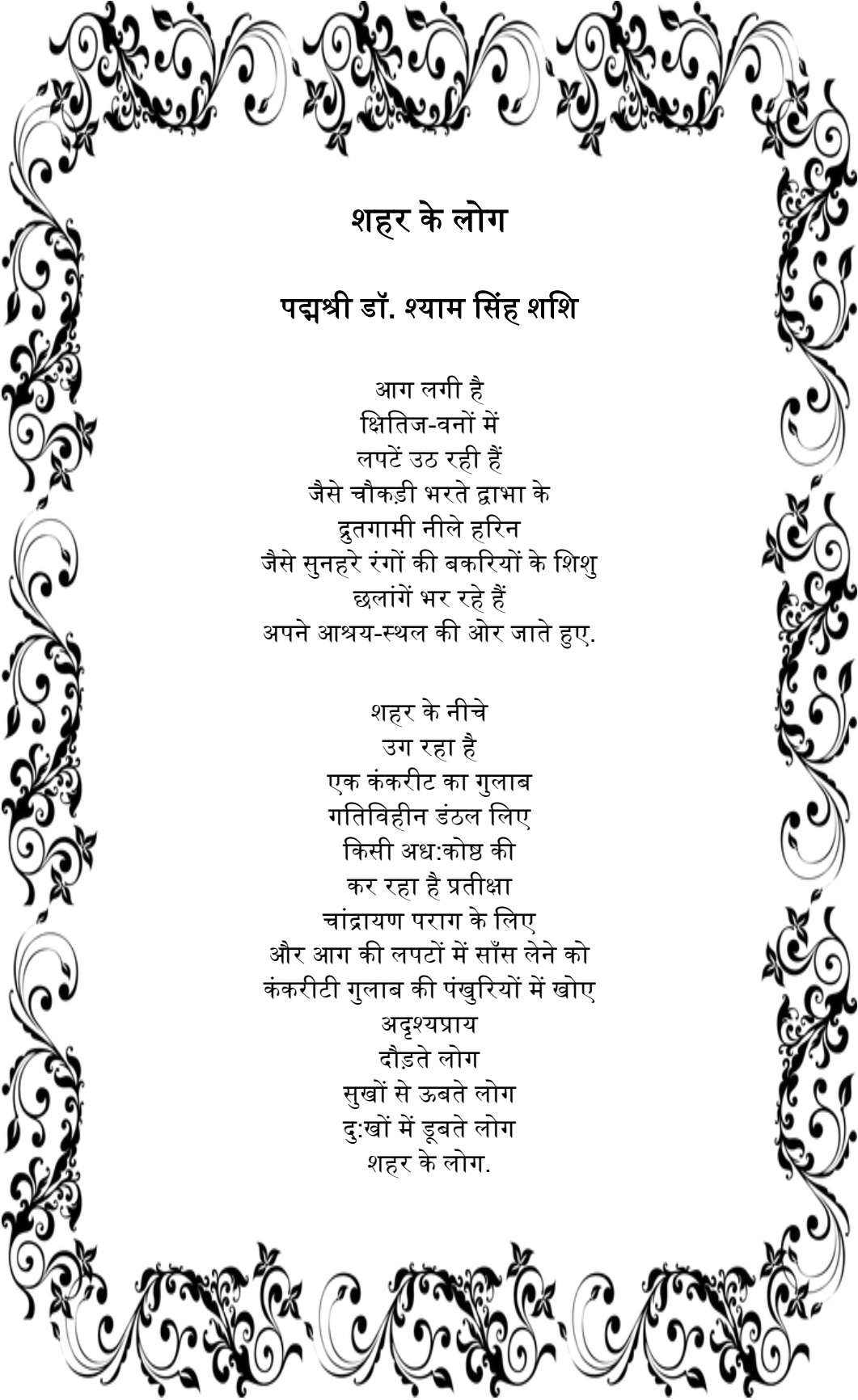


संस्थापक, सम्पादक व प्रकाशक

डॉ. स्नेह ठाकुर

भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत

वर्ष २० - अंक ८०, अक्टूबर - दिसम्बर २०२३



## शहर के लोग

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि

आग लगी है  
क्षितिज-वनों में  
लपटें उठ रही हैं  
जैसे चौकड़ी भरते द्वाभा के  
द्रुतगामी नीले हरिन  
जैसे सुनहरे रंगों की बकरियों के शिशु  
छलांगें भर रहे हैं  
अपने आश्रय-स्थल की ओर जाते हुए.

शहर के नीचे  
उग रहा है  
एक कंकरीट का गुलाब  
गतिविहीन डंठल लिए  
किसी अधःकोष्ठ की  
कर रहा है प्रतीक्षा  
चांद्रायण पराग के लिए  
और आग की लपटों में साँस लेने को  
कंकरीटी गुलाब की पंखुरियों में खोए  
अदृश्यप्राय  
दौड़ते लोग  
सुखों से ऊबते लोग  
दुःखों में डूबते लोग  
शहर के लोग.

## वसुधा

संस्थापक, सम्पादक व प्रकाशक : डॉ. स्नेह ठाकुर

भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में "हिन्दी सेवी सम्मान" से सम्मानित

पोस्ट-डॉक्टरल फ़ेलोशिप अवार्डी

वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड, लंदन में नाम अंकित

शीर्षक	रचयिता	पृष्ठ
सम्पादकीय		२
अध्याय १६ – देवासुरसम्पदा		
विभाग योग	अविनाश कुमार	९
वजूद की जंग	डॉ. श्याम सखा 'श्याम'	१०
कन्फेशन	अरुण अर्णव खरे	१३
यह कालचक्र है	अश्विनी केगांवकर	१९
हावडा - मेदिनीपुर की		
लास्ट लोकल ....!!	तारकेश कुमार ओझा	२१
पुष्प विडम्बना	अमित कुमार कौशल	२३
बुनी हुई रस्सी	भवानी प्रसाद मिश्र	२४
संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा के रूप		
में मिले हिंदी को स्थान	गौरीशंकर वैश्य "विनम्र"	२५
स्वाधीनता का सूर्य	देवराज	२७
श्याम वर्ण के दर्पण	डॉ. आरती 'लोकेश'	२८
हमने बसंत के पत्तों को	रेनू यादव	३२
रक्षामि पर्यवरणम्	रमेश चंद्र	३३
दिशाहीन समाज और घटते जीवन-मूल्य	डॉ. मुक्ता	३५
चीखता मौन	डॉ. ऋतु शर्मा (नंनन पाँडे)	३७
मैं नारी हूँ	डॉ. पूजा अलापुरिया 'हेमाक्ष'	३९
मृत्यु जब मेरे सिरहाने खड़ी होगी...	देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	४१
आज बने इतिहास	डॉ रामनिवास "मानव"	४३
शहर के लोग	पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह "शशि"	१ अ
डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार		४४ अ

रचनाओं में निहित विचार तथा मन्तव्य रचनाकारों के निजी विचार तथा मन्तव्य हैं। 'वसुधा' रचनाकारों के विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं है। प्रकाशक की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा।

रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क पता :

16 Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1V-1E9, Canada. TEL. 416-291-9534

वार्षिक शुल्क Annual subscription.....\$25.00

डाक द्वारा By Mail \$35.00, International Mail \$40.00

Website: <http://www.Vasudha1.webs.com>

E-mail: [dr.snehthakore@gmail.com](mailto:dr.snehthakore@gmail.com)

## सम्पादकीय

भारत के अमृत महोत्सव पर्व पर सम्पूर्ण वर्ष में हुए एक से एक उत्तम कार्य जहाँ मन को प्रफुल्लित करते हैं, वहीं सर को गर्व से ऊँचा उठा देते हैं, जिनका वर्णन यथा समय सम्मानपूर्वक, गर्वपूर्वक वसुधा करती आई है। चंद्रयाम व सूर्ययाम की अपूर्व सफलता के बाद “भारत G20 India” ने विश्व के छोटे-बड़े सभी राष्ट्रों को अपनी उभरती शक्ति से अभिभूत किया है। भारत के प्रति उसके तेजी से उभरते राजनैतिक, आर्थिक पक्ष ने सभी को आश्चर्यचकित करते हुए उसकी उभरती शक्ति का लोहा मानते हुए सम्मोहित किया है। भारत की उभरती शक्ति का आभास तो उन्हें हो रहा था पर G20 ने तो उन्हें भारत का वह अकल्पनीय रूप दिखाया जिसने उन्हें धराशायी ही कर दिया। जितना कुछ वे सोच के आये थे उससे कहीं अधिक उन्हें प्राप्त हुआ। जहाँ भारत की वैज्ञानिक शक्ति ने, सूर्यायन, चंद्रायन ने उनके नयन-पट खोले, वहीं भारत की संस्कृति ने उन्हें विस्मय-विमूढ़ किया। भारत एक समय विश्व-गुरु था, यह तो उन्हें समझ आ गया था पर साथ ही अब यह भी आभास हो गया कि भारत उस महा-पद को पाने हेतु उस ओर कर्मठतापूर्वक अग्रसर भी है।

भारत के स्वतंत्रोत्तर इतिहास में कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि विश्व के सबसे बड़े देशों के राष्ट्राध्यक्ष भारत में किसी एक सम्मेलन के लिए एक साथ इकट्ठे हुए हों। मगर जो पहले कभी नहीं हुआ, वही तो मोदी जी ने कर दिखाया।

राजनैतिक रूप से यह भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी के व्यक्तित्व की अपार सफलता है कि उन्होंने राजनैतिक कूटनीति द्वारा पचपन देशों के संगठन “अफ्रीकन यूनियन” को भी G20 के सदस्य के रूप में मान्य करवा लिया।

माननीय मोदी जी के पुण्य प्रयासों से ही सऊदी अरब के प्रिंस सलमान और यू.ए.ई. के राष्ट्रपति खलीफ़ा बिन ज़ायद अल नाहयान भी इस सम्मेलन में शामिल होने हेतु पधारे।

इस सम्मेलन की विराटता की पूर्वानुभूति विश्व की अनेकों प्रमुख वित्तीय संस्थाओं के प्रमुखों को भी इस महान् अवसर पर उपस्थित रहने हेतु खींच लाई।

वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि मोदी जी ने वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा को न केवल फलीभूत किया है, वरन् भविष्य हेतु अनेक आशाओं से भरे द्वार भी खोले हैं।

नरों के इन्द्र, माननीय नरेंद्र मोदी जी आपने “इंडिया” को “भारत” होने की यकायक जो हरी झंडी दे दी वह बहुत ही असाध्य कार्य था जो आपने यकायक साध्य बना दिया। कितनी सहजता से आपने “भारत G20 India” लिख कर “भारत” को “इंडिया” से प्राथमिकता दे दी, प्रधानता डे दी। जो आपने “G20” की पुस्तिका निकाली है उसने भारतीयों और प्रवासी भारतीयों को गौरव से परिपूर्ण कर दिया है। कृपया प्रवासी भारतीयों की ओर से मेरी बधाई स्वीकारें। आप जब भी कैनेडा, अमेरिका में आए, हम सब प्रवासी भारतीय उन सब आत्मिक क्षणों को बड़े गर्व से जीते हैं।

काश! “भारत G20 India” सम्मेलन के इस सुअवसर पर मैं भारत में होती। प्रगति मैदान कई बार गई हूँ और साहित्यिक परिसर के रूप में उसे नमन किया है; पर जो चित्रों से “भारत मंडपम” के भव्य निर्माण का दर्शन किया है, वह अनुपम है, अतुलनीय है। भारतीय मनीषियों की यह बौद्धिक परिकल्पना, सरस्वती माँ की उन पर अखण्ड कृपा से ही सम्भव है। सभी को साधुवाद जिन्होंने अपने कार्य-कौशल से इसे दुनिया के शीर्ष दस कन्वेंशन सेंटर्स में शामिल करवा दिया। यह आज की स्थिति में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

और फिर “भारत मंडपम” में प्रवेश करने से पहले पूज्य नटराज, भोलेनाथ शिव शंकर जी की आश्चर्यचकित करने वाली गरिमामयी प्रतिमा, “नटराज” के दर्शन! उचित ही तो है। आरम्भ से ही भारतीय संस्कृति की झलक परमावश्यक है। “भारतीय दर्शन” जिसने भारत को विश्व गुरु बनाया था, जो भारतीय





संस्कृति का अभिन्न अंग है, जो आदि-अंत है, जो पुरुष और नारी रूप से सम्पूर्ण है, हे शिव शम्भु! तुम्हें शत-शत प्रणाम। आपने प्रवेश द्वार से ही प्राचीन अवर्णनीय भारतीय संस्कृति का अतिथियों को परमावश्यक बोध-ज्ञान दे दिया, इससे बढ़कर हर्ष की बात और क्या हो सकती है!

सत् सृष्टि ताण्डव रचयिता  
नटराज राज नमो नमः ।  
हे आद्य गुरु शंकर पिता  
नटराज राज नमो नमः ॥

ताण्डव द्वारा सृष्टि की रचना करने वाले हे नटराज राज! आपको नमन है। हे आदि गुरु शंकर परं पिता नटराज राज! आपको नमन है।

गम्भीर नाद मृदंगना  
धबके उरे ब्रह्माडना ।  
नित होत नाद प्रचण्डना  
नटराज राज नमो नमः॥

हे नटराज राज! आपके गम्भीर संगीत की मृदंग ध्वनि द्वारा ही ये सम्पूर्ण विश्व संचालित होता है। इस संसार में व्याप्त प्रत्येक ध्वनि के श्रोत आप ही हैं, आपको नमन।

शिर ज्ञान गंगा चंद्रमा  
चिद्ब्रह्म ज्योति ललाट मां ।  
विषनाग माला कंठ मां  
नटराज राज नमो नमः ॥

हे नटराज राज! अपने सिर में ज्ञान रूपी गंगा एवं चंद्र को धारण किया हुआ है, आपके ललाट पे हमेशा अविनाशी ब्रह्म ज्योति विराजमान रहती है और आप विषधारी नाग को गले में धारण करते हैं आपको नमन है।

तवशक्ति वामांगे स्थिता  
हे चंद्रिका अपराजिता ।  
चहु वेद गाए संहिता  
नटराज राज नमोः ॥

हे नटराज! राज (माता) शक्ति आपके वामांग (बाएँ अंग का अधिकारी / अर्धांगिनी) में बैठी है। हे चंद्रिका अपराजिता (माता का दूसरा नाम) चार वेद आपकी ही संहिता का गान करते हैं आपको नमन है।

भारत विश्व गुरु था और अब पुनः वह अपने खोये हुए रूप को पायेगा, अब पुनः “विश्व गुरु” बनेगा, यह अकल्पनीय कल्पना, अवधारणा अपना साक्षात् रूप धारण करने जा रही है, यह निःसंदेह सत्य प्रमाणित होने वाला है।

वैसे मोदी जी! जिस सहजता से आपने “इण्डिया” को “भारत” बना दिया, उसी सहजता से आपने “भारत मंडपन” नाम रख कर जहाँ भारतीय संस्कृति को महिमामंडित किया है, ‘भारत मंडपम्’ के कोने-कोने में भारतीय संस्कृति की महिमा, गरिमा को प्रस्तुत करके, भारत की वैदिक परम्परा के दर्शन करा, अतिथियों को न केवल चकित, सम्मोहित कर दिया है, संस्कृत और हिंदी भाषा के सिर पर चुपके-से ताज रख दिया है, वरन् वहीं अपने विनम्र, ज्ञान-परिपूर्ण आचरण से भारत के “विश्व गुरु” पद की अघोषित घोषणा भी कर दी है।

“भारत मंडपम्” एक नया सम्मेलन परिसर है जो भारत के वैश्विक व्यापार गंतव्य के रूप में प्रदर्शित और बढ़ावा देने में मदद करेगा। “भारत मंडपम्” का नाम भगवान् बसवेश्वर के अनुभव मंडपम् के विचार से



लिया गया है। जियो, एक सार्वजनिक समारोह के लिए एक मंडप था। “भारत मंडपम्” परिसर को भारत का सबसे बड़ा MICE (सम्मेलन, प्रोत्साहन, सम्मेलन, और प्रदर्शनी) गंतव्य के रूप में विकसित किया गया है।

प्रगति मैदान, “भारत मंडपम्” में अष्टधातु से बनी यह दुनिया की सबसे ऊँची मूर्ति है। इसे तमिलनाडु के स्वामी भलाई के प्रसिद्ध मूर्तिकार राधाकृष्णन् और उनकी टीम ने रिकॉर्ड सात महीने में तैयार किया है। चोल साम्राज्य काल से ही राधाकृष्णन् की ३४ पीढ़ियाँ मूर्तियाँ बना रही हैं। ब्रह्मदीप ऊर्जा, रचनात्मकता और शक्ति का महत्वपूर्ण प्रतीक है। नटराज की यह प्रतिमा G 20 शिखर सम्मेलन में आकर्षण का केंद्र रही है।

परिसर में १,००,००० वर्ग मीटर का एक प्रदर्शनी का एक सम्मेलन क्षेत्र, २,००,००० वर्गमीटर का एक सम्मेलन क्षेत्र, ३००० लोगों के लिए एक ऑडिटोरियम, ४०० लोगों के लिए एक सेमिनार हॉल, १०० लोगो के लिए कई कार्यशाला हॉल, एक प्रदर्शनी हॉल और कई अन्य सुविधाएँ शामिल हैं। “भारत मंडपम्” का डिजाइन शांक (शंख) से प्रेरित है। केंद्र के विभिन्न दीवारों और मुखाँटे भारत की पारम्परिक कला और संस्कृति के कई तत्वों को दर्शाते हैं, जिनमें “सूर्य शक्ति”, “शून्य से इसरो”, और “पंच महाभूत” शामिल हैं। सूर्य शक्ति भारत की सौर ऊर्जा के प्रयासों को उजागर करती है।

“G 20 शिखर सम्मेलन” के अवसर पर ही भारत के “चंद्रायन” और “सूर्यायन” ने अपनी अद्भुत छटा बिखेर विश्व की महा-शक्तियों को यह दिखा दिया था कि अब हम भी तुमसे पीछे नहीं हैं।

ध्यान दीजिए कि, “क्या है G20 2023 का प्रतीक-चिह्न (लोगो)?” क्या है “जी-20 की विषय-वस्तु (थीम)?” “भारत का G20 अध्यक्षता का विषय?” इसकी विषय-वस्तु है, “वसुधैव कुटुम्बकम्” या “एक पृथ्वी · एक कुटुम्ब · एक भविष्य” है। इसकी प्रेरणा महा उपनिषद् के प्राचीन संस्कृत पाठ से ली गई है।

जी-20 के “प्रतीक-चिह्न, लोगो” पर अगर आपने गौर किया होगा तो आपको नजर आएगा कमल का फूल और धरती। प्रतीक-चिह्न के नीचे देवनागरी लिपि में “भारत” लिखा है। साथ ही पूरे प्रतीक-चिह्न को तिरंगे का रंग दिया गया है।

माननीय मोदी जी की ओजस्विनी माँ ने उन्हें एक शिक्षा सूत्र दिया था कि, “काम करो बुद्धि से और जीवन जियो शुद्धि से” और उनके वीर सपूत ने अपनी माँ की इस शिक्षा को हृदयंगम कर लिया है। कहते हैं न कि ईश्वर सब जगह नहीं होता, इसीलिए उसने माँ बनाई है। जहाँ वह माँ धन्य है जो ऐसी शिक्षा दे रही है वहीं ऐसे आज्ञाकारी पुत्र भी विरले हैं जो उन की धारणाओं को हृदयंगम कर उन पर अमल करते हैं। उस त्रिमूर्ति की अवधारणा को साकार करने में प्रयत्नशील रहते हैं जिसमें एक तपस्वी की यात्रा, निष्काम कर्मयोगी का प्रतीक और सद्-मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध जीवन समाहित रहता है।

लोक सभा में भाषण देते हुए भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी का मन्तव्य, “एक सौ चालीस करोड़ का देशवासियों का पुरुषार्थ इस काल-खण्ड में अपने पराक्रम से, अपने पुरुषार्थ से, अपनी शक्ति से, अपनी सामर्थ्य से जो करेगा वो आने वाले एक हजार साल की नींव रखेगा। भारतीय समुदाय की सर्वाधिक ताकत हमें यहाँ तक पहुँचा देगी। किसी भी देश के जीवन के इतिहास में एक समय ऐसा आता है जब वह पुरानी बंदिशों को तोड़कर के एवं नई ऊर्जा के साथ, एक नई उमंग के साथ, सपनों के एक नये संकल्प के साथ, आगे बढ़ने के लिए कदम उठा लेता है। इसलिए इस काल-खण्ड में हम सबका बहुत बड़ा दायित्व है, बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, और ऐसे समय हम सबका एक ही फोकस होना चाहिए – देश का विकास। देश के लोगों के सपनों का पूरा करने का संकल्प और संकल्प को सिद्धि तक ले जाने के लिए जी-जान से जुड़ जाना। यही समय की माँग है।”

वास्तव में किसी भी देश के लिए यह मूलमंत्र है जो भारत के प्रधानमंत्री माननीय मोदी जी ने दिया है, “हम सबका एक ही फोकस होना चाहिए, देश का विकास, देश के लोगों के सपने पूरा करने का संकल्प”, क्या यह हर देश का महामंत्र संकल्प नहीं होना चाहिए? क्या आश्चर्य! हर देश का जो भी प्रतिनिधि भारत आया, वह वाह-वाही करते ही भारत से निकला।

माननीय मोदी जी का यह विचार अति उत्तम था, “संकल्प को सिद्ध करने के लिए १४० करोड़ देशवासी, इन भारतीय समुदाय की सामूहिक ताकत हमें उस ऊँचाई पर पहुँचा सकती है। यह कालखण्ड आने वाले एक हजार साल की नींव रखेगा। भारतीय समुदाय की सर्वाधिक ताकत हमें यहाँ तक पहुँचा देगी। किसी भी देश के जीवन में, इतिहास में, एक समय ऐसा आता है जब वो पुरानी बंदिशों को तोड़कर एक नई ऊर्जा के साथ, एक नई उमंग के साथ, सपनों के एक नये संकल्प के साथ, आगे बढ़ने के लिए कदम उठा लेता है।”

मैं, प्रवासी साहित्यकार, “ओसीआई”, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के वक्तव्य को पूर्णतः सम्पन्न करने की क्षमता तो नहीं रखती, पर हाँ! वर्षों से अपने साहित्य द्वारा इस दिशा में प्रयत्नशील अवश्यमेव हूँ। वर्षों से भारतीय संस्कृति, संस्कारों को प्रसारित करने का प्रयास कर रही हूँ। भारतीय संस्कारों की महत्ता को समझाने का प्रयत्न कर रही हूँ, जो मुझे मेरी जन्म देने वाली माँ एवं भारत माता ने “जनम-धूँटी” में मिला कर पिलाए थे। “साहित्य वह प्रकाश स्तम्भ है जो भटके राही को दिशा प्रदान करता है” के माध्यम से जो भी कर सकती हूँ, कर रही हूँ। देश बने विदेश की भूमि पर भारतीय संस्कृति का परचम गर्व से लहरा रही हूँ।

माननीय मोदी जी व उनकी सरकार मन-वचन-कर्म से धैर्यपूर्वक एक-एक पग आगे रखते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसित है।

हाल ही में माननीय मोदी जी ने नये सांसद भवन में पदार्पण किया। अतीत की पृष्ठभूमि को न भुला, उसे आदर-सम्मान से स्मृति-कोष में रख, वर्तमान के नये सांसद भवन में गर्व सहित प्रवेश कर, वहाँ भविष्य की धरोहर हेतु नई स्मृतियों का निर्माण करने के लिए नारी सशक्तिकरण का बीड़ा उठाया, और इस हेतु उनकी सीटों की संख्या बढ़ाई। साधुवाद माननीय मोदी जी। आपने नारी जाति का गर्व से सर ऊँचा किया है। जिस पावन-पुनीत माँ ने आपको ये संस्कार दिए हैं वे स्वर्ग से आप पर आशीषों के पुष्प बरसा रही होंगी कि आपने उनकी मान्यताओं को अपने स्मृति-कोष में रखा और उन पर अमल कर रहे हैं।

### “यह भारत का टाइम है”

कुछ वर्षों से प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी की अगुआई में भारत न सिर्फ कहता आया है कि उसका “टाइम आ गया है”, बल्कि तमाम विकासशील देशों के हितों की आवाज के रूप में भी उभरा है जिसका क्लाइमेक्स इस सम्मेलन में दिखा। साउथ अफ्रीका-ब्राजील-इंडोनेशिया जैसे देश तमाम विकसित देशों के सामने न सिर्फ मजबूत बनकर उभरे, बल्कि संदेश देने में भी सफल रहे कि अब कोई अजेंडा एकतरफा तय नहीं होगा। भारत ने बहुत ही विनम्रता से विकसित देशों को उनके लिए एकतरफा फैसला नहीं लेने का गम्भीर संदेश भी दे दिया।

स्वयं को “देश का प्रधान सेवक”, “भारत का प्रधान सेवक” कहने वाले भारत के प्रधान-मंत्री माननीय नरों के इन्द्र, श्री नरेंद्र मोदी जी न केवल ऐसा कहते हैं वरन् वास्तव में ही इसी मनो-भावना से, इसी मनोदशा से, इसी जज़्बे से, शालीनतापूर्वक, विनम्रतापूर्वक, शांत चित्त, अपने देश के प्रति, अपने प्रिय भारत के प्रति, कर्मरत रहते हैं जिसे विदेशियों ने भी देखा, पहचाना और मुक्त-कंठ से सराहा।

ईश्वर से प्रार्थना है कि ऐसे कर्मठ व्यक्तित्व को ईश्वर और भी ऊर्जा प्रदान करें, वैसे देखा जाए तो माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी प्रतिदिन १८ घंटे काम करते हैं, अब ईश्वर भी उनसे इससे और अधिक कार्य करने के लिए क्या कहेंगे! अतः ईश्वर से प्रार्थना है कि वे मोदी जी को स्वस्थ दीर्घायु प्रदान करें जिससे माननीय मोदी जी



भारत के दीर्घकालीन उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर भारतवासियों को भारत के पूर्व स्वर्णकालीन युग में प्रतिस्थापित कर सकें – और पूर्व स्वर्णकालीन युग की बात पर, दीपावली के पावन पुनीत महोत्सव की सबको शुभ-कामनाएँ; सभी में परस्पर विश्व-बंधुत्व की भावना बनी रहे।

इसी मंगल-कमाना के साथ,

सस्नेह,

स्नेह ठाकुर











## अध्याय १६ – देवासुरसम्पदा विभाग योग

अविनाश कुमार

इस अध्याय में परमेश्वर दैवीय सम्पदा अर्थात् आध्यात्मिक सम्पदा और असुरी सम्पदा, अर्थात् भौतिकी सम्पदा की विवेचना करते हैं। दैवीय सम्पदा मनुष्य को पदार्थों से नहीं, वरन, अध्यात्म से जोड़ती है। जबकि आसुरी सम्पदा मनुष्य को सांसारिक सुखों में लिप्त रख कर उसे प्रभु से दूर रखती है।

### कृष्ण उवाच :

दैवीय सम्पदा को प्राप्त करे जो मनुष्य, है उसके लक्षण,  
भय को तज, शुद्ध हृदय करे, करे दान, इंद्रि-भक्षण।

(०१)

ओढ़े सत्य, अहिंसा, त्यागे क्रोध, द्वेष और राग,  
दयावान, कोमल अंतर वे, अचपल हृदय विभाग।

(०२)

क्रोध कठोर, अविवेक भए, दम्भ भरे, अभिमानी,  
आसुरी सम्पदा ग्रस्त भए, मनुज की यही निशानी।

(०४)

अभी प्राप्त हैं, कितने साधन, जोड़ने कितने और,  
आज बना धन मेरा कितना, कितना कल मन चहुँ ओर।

(१३)

अहंकार हठ क्रोध हैं रखते, देखे सब में दोष,  
जीव अजीव स्थित ब्रह्मा भी, देता उनको रोष।

(१८)

मृत्युलोक को लौटे वे, नहीं एक, बारम्बार,  
मुझको पाना तो दूर, वे पाये अंध गति का सार।

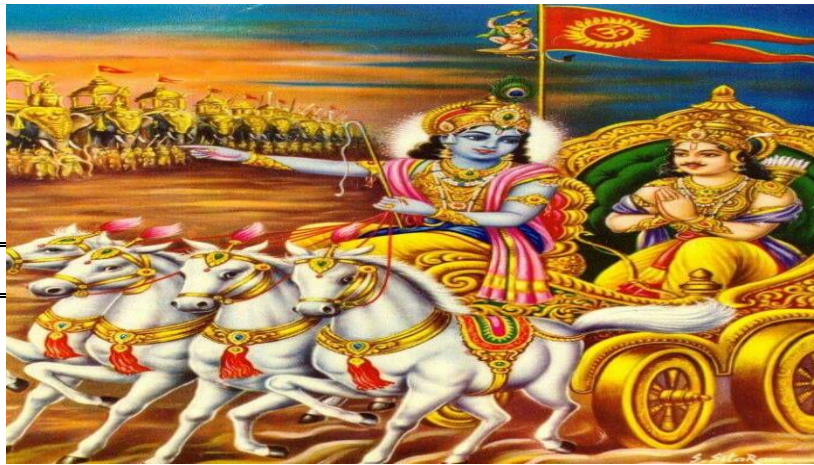
(२०)

काम, क्रोध और लोभ हैं अर्जुन, तीन नरक के द्वार,  
कारण बने पतन का केवल, त्यागे इन्हे संसार।

(२१)

हे अर्जुन, तू शास्त्र को दर्पे, ज्ञान कर्म अपनाए,  
शास्त्र विधि से अपने कर्तव्य मार्ग पे चलता जाए।

(२४)



## वजूद की जंग

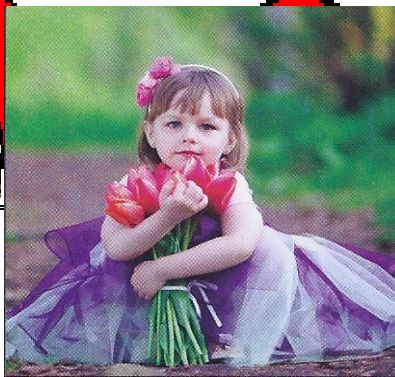
डॉ. श्याम सखा 'श्याम'

जिन्दगी को जब कभी  
मैं  
जब भी  
हक औ हकूक  
की बात करता हूँ  
मैं  
जब भी  
अपने वजूद  
की बात करता हूँ  
तो लोग  
लाठी लेकर  
मारने दौड़े चले आते हैं  
चिल्लाते हैं  
कि  
इस पर  
मसीहा उतर आया है  
फिर  
किसी इन्सान पर  
बुद्ध, ईसा या मार्क्स  
बनने का  
भूत समाया है  
मानो  
ये सब लक्कड़बग्घे थे  
जो  
बच्चों को  
उठा ले जाते थे  
पहले जब ऐसी बातों  
पर  
सर फुटौवल होता था  
तो दोस्त  
समझाते थे  
कि  
पगले  
ऐसी बातें मत किया कर



औरों को जीने दे  
 और खुद भी जिया कर  
 पर मैं  
 उनकी बातें पचा नहीं पाता था  
 अब जब भी  
 हको हकूक  
 या इन्साँ के वजूद की  
 बात पर  
 पिट-पिटा कर  
 घर लौटता हूँ  
 तो  
 पत्नी आँचल से  
 मेरा  
 लहू पोंछती है  
 घी  
 हल्दी से  
 शरीर की चोट सेंकती है  
 कातर  
 निरीह  
 आँखों से मेरे दिल में  
 झाँकती है,  
 उसकी इन  
 नजरों से  
 मैं कमजोर पड़ जाता हूँ  
 मेरी  
 रूह आँधी में  
 दीए की मानिन्द काँपती है  
 मैं सोचता हूँ  
 कि हको हकूक  
 की बात करना छोड़ दूँ  
 अब तक  
 जो ख्वाब बुने थे  
 इन्सानियत के  
 सारे के सारे तोड़ दूँ  
 पर  
 तभी सामने आ खड़ी होती है  
 वसु  
 माने

छोटी सी  
प्यारी सी  
बेटी  
मेरी बेटी बसुदा  
साफ  
पाक आँखों से झाँकती  
मानो मेरी  
कमजोरी को भाँपती  
जैसे  
पूछती हो  
पापा फिर कौन लड़ेगा?  
उन लोगों ने  
जिन्होंने खरीद लिया है  
दाखिले  
इंजिनयरिंग  
और मेडिकल कालेजों के  
जिन्होंने  
मिलकर बाँट ली है  
सारी  
नौकरियाँ  
जाति धर्म  
और भाई भतीजावाद  
का नारा लगाकर  
विश्वमुद्राकोष और पूँजीवादियों के हाथों  
छीन रहे हैं  
दस्तकारों के जीने का हक  
मैं लड़खड़ाता-सा  
पत्नी के  
कान्धे का सहारा लेकर  
खड़ा होता हूँ  
और  
अपनी कमजोरी की लाश  
पर  
खड़ा होकर चिल्लाता हूँ  
इन्कलाब  
जिन्दाबाद।



## कन्फेशन

अरुण अर्णव खरे

आज बहुत उदास है जोजो। जोजो जब उदास होती है, इसी तरह चर्च के दाहिनी तरफ बने छोटे से सरोवर के किनारे पड़ी बेंच पर घंटों बैठी रहती है, शून्य में ताकती, उड़ती तितलियों को निहारती तथा बत्तखों के बच्चों को अठखेलियाँ करते देखते हुए। जब मन शांत हो जाता और चर्च में चहल-पहल बढ़ने लगती तो उठ कर प्रार्थना में भाग लेने चली जाती। कभी मन नहीं होता तो अपने कमरे में आ जाती।

फादर एटर्किंस जब भी उसे इस तरह बैठे देखते हैं वह समझ जाते हैं कि जोजो आज फिर किसी बात को लेकर आहत हुई है। वह विह्वल है। फादर एटर्किंस यह जान कर भी उसे टोकते नहीं हैं क्योंकि वह समझ चुके हैं कि जोजो के मन को शांति इसी बेंच पर एक-दो घंटे गुजारने के बाद अक्सर मिल जाती है। वह पहले कितनी बार जोजो से कह कर देख चुके हैं कि "डियर चाइल्ड, मन जब व्यथित हो, कुछ सूझ न रहा हो कि क्या करें, कोई ऐसी गलती हो गई हो, जो तुम्हें स्वयं समझ में न रही हो, तब तुम ईशू के पास जाकर उनसे बात किया करो। अपनी जानी-अनजानी गलतियों के लिए कन्फेस करना सीखो। ईशू बहुत दयालू हैं वह सब पर दया करते हैं।" पर जोजो "फादर जब समय आएगा कन्फेस जरूर करूँगी" कह कर सरोवर किनारे लगी बेंच पर बैठने चली जाती।

कौन है जोजो? जोजो यानि कि जोसलिन जो। वह जब बमुश्किल चार-पाँच दिन की रही होगी तभी कोई उसे चर्च के बाहर छोड़ गया था। किसी अभागी माँ की संतान है जोजो। फादर एटर्किंस ने प्रशासनिक औपचारिकाताएँ पूरी कर उसे चर्च में ही रख लिया था। सिस्टर रचैल के रूप में उसे मदर और पालनहार मिल गया। जोजो चर्च में रहने वाले दूसरे बच्चों से शीघ्र हिल-मिल गई पर वह खेलते, उछल-कूद करते अक्सर कहीं खो जाती। बच्चे उसे "ओए जोजो, क्या हुआ, कहाँ खो गई" कहते हुए झूमाझटकी कर बैठते। दिन बीतते गए। जोजो अठारह वर्ष की हो गई। दोपहर में चर्च में उसके लिए विशेष प्रार्थना रखी गई थी। केक काटा गया और फिर बच्चों का रंगारंग धमाल शुरू हो गया। चर्च में रहने वाले हर बच्चे का जन्मदिन वहाँ इसी तरह मनाते हैं। यह परम्परा फादर एटर्किंस ने शुरू की थी। उनका मानना है कि सामाजिक मर्यादा और मान्यताओं के विरुद्ध जन्में इन बच्चों के हिस्से में जितनी खुशी आ सके उसके लिए प्रयास करते रहना चाहिए।

जोजो को कोई मानसिक बीमारी नहीं है। उसका पूरा चेकअप मिशन अस्पताल में एकाधिक बार हो चुका है। वह पढ़ने में बहुत अच्छी है। कक्षा में हमेशा पहले या दूसरे स्थान पर आती है। प्रकृति से उसे सहज लगाव है। सुंदर लैंडस्केप बनाती है। बड़ी हुई तो उसकी पेंटिंग में यदा-कदा पेड़ों से झरते पत्तों के बीच उदास लड़कियों के चेहरे दिखाई देने लगे। क्यों? इसका उत्तर जोजो के भी पास नहीं है। ये चित्र अनायास बन जाते हैं। सायास बनाना चाहे तो नहीं बना पाती। जोजो चपल भी बहुत है। हर काम तेज गति से करती है। उसके साथी कैम्पस ग्राउंड में ही बैडमिंटन या क्रिकेट खेलते हैं लेकिन उसे खो-खो खेलना पसंद है। उसके साथी जो-जो और खो-खो की तुक मिलाकर अक्सर उसे छेड़ते रहते हैं - देखो जोजो, खेलने चली खो-खो या ऐसा ही कुछ और।

उस दिन जोजो के हाथों में एक अखबार था जो आते समय वहीं बेंच के नीचे छूट गया था और जोजो उठाना भूल गई थी। अगले दिन सफाई कर्मचारियों को मुड़ा-तुड़ा वह अखबार वहाँ पड़ा मिला तो जैनी समझ गई कि यह अवश्य ही जोजो का होगा। उसने उसे ले जाकर मदर रचैल को दे दिया। मदर ने उस समय तो ध्यान नहीं दिया और उसे जोजो को देने के लिए रख लिया।



दिन बीतते रहे जोजो का अचानक उदास हो जाना जारी रहा। अंदर का तूफान जब ज्यादा मचलने लगता, वह उसी सरोवर के किनारे आकर बैठ जाती। इतने सालों में उसने समझ लिया है कि प्रकृति में हर दुख को हरने की अपरिमित क्षमता है। फूल, तितलियों, चिड़ियों और बत्तखों के बीच कुछ समय बिताने से उसका मन शांत हो जाता है। प्रफुल्लित भले ही न हो पाए पर संयमित नजर आने लगती है जोजो। कई बार वह सोचती है कि उसे फादर की बात माननी चाहिए .. वैसे हर बात मानती है उनकी, पर न जाने क्यों उनके कहने पर ईशू के सामने कन्फेस करने की हिम्मत नहीं जुटा पाती। सोचती है किस बात के लिए कन्फेशन करूँ, उसने कुछ किया भी तो नहीं। ईशू दयालू हैं तो क्या बात-बात पर ईशू को परेशान करना उचित है। पर फादर नहीं समझते। कहते हैं ईशू कभी परेशान नहीं होते। हमसे अनजाने में बहुत सी गलतियाँ हो जाती हैं जिनके बारे में हमें उस समय पता नहीं चलता, ईश्वर के सामने कन्फेस करने से मन को शांति मिलती है। मन हल्का हो जाता है। मन में मानव-कल्याण का भाव आ जाता है। सब कुछ भला लगने लगता है। जोजो को यह सब तो सरोवर के किनारे मिल जाता है। जिस दिन उसे वहाँ शांति नहीं मिलेगी, उस दिन वह जरूर ईशू के सामने कन्फेस करने जाएगी। पर फिर दुविधा, कन्फेस करेगी या ईशू से पूछेगी कि उसका मन इतना अस्थिर क्यों है, इतनी जल्दी विचलित क्यों हो जाता है ? मन तो होता ही चंचल है। ईशू मन की प्रकृति को क्यों कर बदलना चाहेंगे? उसे शांत रखने की कोई अदृश्य प्रेरणा ही दे सकते हैं वह। उसे तो पता है कि उसके मन को कहाँ शांति मिलती है? जोजो मन ही मन सोचती बहुत है और फिर उनके तार्किक उत्तर भी मन में ही खोज लेती है।

मदर रचैल अगले दिन दोपहर में जोजो के कमरे में वह मुड़ा-तुड़ा अखबार रखने गई। जो-जो उस समय कॉलेज में थी। डायरी के बीच में वह अखबार रखकर पलटी ही थी कि डायरी से कुछ और पेपर की कटिंग्स नीचे आ गिरीं। मदर ने उन्हें उठाया, मन में उत्सुकता जगी कि देखें क्या कटिंग्स हैं ये, पर उन्होंने ने जोजो को सिखाया था कि किसी दूसरे व्यक्ति की चीजें उसकी अनुमति के बगैर नहीं छूनी चाहिए। उन्होंने सभी कटिंग्स को सँभाल कर डायरी में रख दिया। रखते-रखते एक कटिंग की हेडलाइन पर न चाहते हुए भी उनकी नजर पड़ गई। १६ दिसम्बर २०१२ को घटित निर्भया कांड के समाचार की कटिंग थी वह। इसके बाद तो रचैल ने सारी कटिंग्स उलट-पुलट डाली। हर कटिंग में किसी न किसी के साथ हुए नृशंस बलात्कार और हत्याओं के समाचार थे। यह देखकर मदर के भीतर एक अनजाना डर समा गया कि जोजो के अवचेतन में कहीं यह बात तो घर नहीं कर गई कि वह किसी बलात्कारी की संतान है। बच्चे जब बड़े हो जाते हैं तो उन्हें स्वतः ही समझ में आने लगता है कि वे या तो अनाथ हैं या नाजायज। जोजो ने भी खुद के बारे में ऐसी ही धारणा बना ली है शायद। मदर के सामने जोजो के अचानक उदास हो जाने के अनेक प्रकरण साकार होने लगे। उन्हें जोजो की उदासी का कारण समझ में आने लगा। जोजो जब भी ऐसे समाचार पढ़ती होगी तो अंदर से विह्वल हो जाती होगी और उदासी के अंधेरों में भटकने लगती होगी। "जोजो से बात करूँगी शाम को", सोचा मदर ने लेकिन फिर विचार बदल दिया - "ये ठीक नहीं होगा, फादर को पहले बताना चाहिए। वह कोई न कोई रास्ता जरूर सुझाएँगे। वही जोजो को उदासी के इस भँवरजाल से बाहर ला सकते हैं।"

"अभी अनुमान के आधार पर जोजो से बात करना उचित नहीं होगा, वह बच्ची नहीं है अब, कॉलेज में पढ़ती है, उसके पास स्वयं का भला-बुरा समझने की प्रतिभा है, हम उससे अपने मन की शंका के समाधान के लिए बेवजह प्रश्न नहीं पूछ सकते। हमें इंतजार करना चाहिए और जोजो पर नजर भी रखनी होगी। यदि रेप केसेज के साथ उसकी उदासी का कोई स्पष्ट दृष्टांत सामने आता है तो हमें हर स्थिति पर विचार करके ही कोई रास्ता खोजना होगा" - फादर ने मदर रचैल को समझाया, जिनने शाम की प्रेयर के बाद फादर को पूरी कहानी सुनाई थी।

"जी फादर" - कहकर मदर चुप हो गई।





"तुम नील को जानती हो मदर, वह जोजो के साथ अक्सर दिखाई देता है, संडे प्रेयर में भी दोनों साथ ही आते हैं आजकल... सावधानी से पता करो कि जोजो ने कभी उससे अपनी परेशानियों के बारे में कुछ शेयर किया हो" - फादर ने चलते हुए मदर रचैल से कहा।

"जी फादर, नील वेलिंगटन स्कूल की बायोलॉजी टीचर मार्था का बेटा है। उसके पिताजी आर्मी में थे जो २००३ या २००४ में अखनूर में फौजी शिविर पर हुए आतंकवादी हमले में शहीद हो गए थे। नील स्कूल के दिनों से जोजो का दोस्त है। दोनों एक ही क्लास में पढ़ते थे। आजकल वह बी.बी.ए. कर रहा है।"

"मदर, तुमको तो नील के बारे में इतनी जानकारी है, किससे पता चला ये सब?"

"जोजो ने ही बताया है .. नील उसे पसंद करता है और वह नील को।"

"तो जोजो नील से जरूर अपनी बातें, परेशानियाँ और खुशियाँ शेयर करती होगी। अगले रविवार को जब नील चर्च में आए तो मुझे मिलवाना उससे।"

"जी फादर।"

रविवार को नील अपनी माँ के साथ चर्च आया। मदर रचैल उससे बात करने का मौका तलाश कर पाती, उससे पहले ही जोजो सामने आ गई, बोली - "मदर, प्रेयर के बाद मैं नील के साथ मार्केट जाऊँगी, मुझे पेंटिंग का कुछ सामान लेना है। मेरे फिल्बर्ट और मॉप ब्रश खराब हो गए हैं। कुछ पेस्टल कलर्स और ड्राइंग शीट्स भी लेनी हैं।"

"ओके माई चाइल्ड" - मदर बोलीं। यह कहने के अतिरिक्त उनके पास कोई विकल्प भी नहीं था। अब उन्हें अगले रविवार का इंतजार करना था।

जोजो लौट कर आई तो कुछ ज्यादा ही अपसेट थी। वह उदास नहीं थी इस बार, उदास होती तो सरोवर किनारे जाकर बैठ जाती। वह अपसेट थी। उसने लापरवाही से सामान टेबल पर रखा और अपने कमरे में चली गई। मदर रचैल को अचम्भा हुआ। जोजो, जो हमेशा नील के साथ वक्त बिताकर खुश नजर आती थी, आज वह दुखी और बेचैनी से भरी हुई थी। मदर से रहा नहीं गया, उनके हृदय की धड़कनें बढ़ने लगी। वह जोजो के कमरे में आ गई - "क्या हुआ डियर चाइल्ड, तुम इतना अपसेट क्यों हो।"

"मैं आपको नहीं बता सकती मदर" - कहते हुए जोजो मदर से जोर से लिपट गई और सुबकने लगी। मदर चुपचाप उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए मौन सांत्वना दिए जा रही थीं। यह पहला मौका था जब जोजो इस तरह से मदर के सामने फूट-फूट कर रो रही थी। मदर सोच रही थी, "नील ने ऐसा क्या कह दिया होगा जिसने जोजो को इतना दुखी कर दिया।" फिर उनने अपने सोच की दिशा बदलने की कोशिश की - "शायद कुछ अच्छा होने जा रहा है। आँसुओं के साथ यदि जोजो के अंदर के तूफान ने भी बाहर निकलने का रास्ता खोज लिया तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। उसे जी भर कर रो लेने दो। इस समय उससे कुछ कहना उचित नहीं है, उसे केवल स्नेहिल और अपनत्व के स्पर्श की जरूरत है।" मदर बीच-बीच में उसकी पीठ सहलाते हुए उसके आँसू भी पोंछती जा रही थीं।

जोजो सुबकते-सुबकते कब सो गई, मदर को पता ही नहीं चला। वह उसका सिर अपनी गोदी में रखे, डायरी में रखी कटिंग्स के बारे में सोच रही थी कि "कौन-सा सूत्र पकड़ कर जोजो से इस बारे में बात की जा सकती है। उन कटिंग्स में केवल बच्चियों के साथ हुए बलात्कार के समाचार ही नहीं थे अपितु लिंगिंग, ऑनर किलिंग और लव जिहाद सहित बहुत सी अमानवीय घटनाओं के समाचार भी थे। कुछ कटिंग्स महिलाओं के लिए संघर्ष करने वाली मानसी प्रधान और मलाला युसुफजई जैसी सख्शियतों के बारे में थी तो कुछ में महिलाओं के विरुद्ध क्राइम के आंकड़ों की पड़ताल थी। इन सब कटिंग्स के बारे में मदर जब भी सोचती, डर से

भर जाती - "जोजो क्यों ये सब सहेज कर रखती है, क्या चलता रहता है उसके मन में। उस जैसी प्यारी बच्ची को क्या लेना-देना इन बातों से।" सोचते-सोचते मदर उसके भविष्य को लेकर परेशान हो उठती।

जोजो रात भर सोती रही। सुबह उठी तो अपेक्षाकृत तरोताजा थी। मदर ने उसे आवाज दी - "जोजो, मैंने भी अभी तक कॉफी नहीं पी है, सोच रही थी, तुम उठोगी तो साथ में पिएंगी।"

"माई स्वीट मदर, हाऊ गुड आर यू, मेरा इतना ख्याल रखती हो और मैं हमेशा आपको दुखी कर देती हूँ" - जोजो बोली - "आज मैं कॉफी बनाती हूँ .. मैं बनाऊँ मदर?"

मदर को सुनकर अच्छा लगा। उनके अंदर से आवाज आई - "अब चिंता की बात नहीं है, जोजो बदल रही है, उसने अपने अँधेरों से निकलने का प्रयास शुरू कर दिया है .. रास्ता भी पा लिया है शायद।"

"मदर, आपसे कुछ पूछना है?"

"फील फ्री माई डियर, जो कहना चाहती हो कहो।"

"मैं कौन हूँ?"

सुनकर क्षण भर के लिए आवाक रह गई मदर, फिर खुद को सँभालते हुए बोली - "तुम ईश्वर की सबसे सुंदर रचना हो डियर और मैं इस दुनिया की सबसे सौभाग्यशाली मदर हूँ।"

"मैं जानती हूँ मदर, मुझे इससे इंकार नहीं है कि आप दुनिया की श्रेष्ठतम माँ हैं, पर मन है कि तरह-तरह के प्रश्न करता है। कभी लगता है कि नाजायज सम्बंधों से जन्मी संतान हूँ मैं .. तो कभी बलात्कार की शिकार किसी बेबस माँ की कोख से उपजी अभागी औलाद हूँ, आप बताइए मदर, मुझे अब कतई बुरा नहीं लगेगा .. मैंने इस दुनिया के बहुत से गंदे और उजले चेहरों को देख लिया है।"

"मुझे खुद भी नहीं पता कि सच क्या है, सच पता चलता भी कैसे, पता करने की जरूरत ही नहीं समझी कभी .. यहाँ जो आता है उसे ईशू का उपहार समझ कर सहेज लिया जाता है .. तुम्हें हमसे कोई शिकायत है तो जरूर बोलो, पर ये मन से निकाल दो मेरे बच्चे कि तुम अभागी हो, नाजायज हो। हर बच्चा ईश्वर का प्रतिरूप है जिसे पाकर हम धन्य महसूस करते हैं" - मदर भावविह्वल होते हुए बोली।

"आप सही कहती हैं मदर, आज के बाद कभी ये बात अपने दिल में नहीं आने दूँगी। प्रॉमिस है मेरा" - जोजो चिरपरिचित अंदाज से भिन्न स्वर में बोली।

सुनकर मदर रचैल के चेहरे की आभा द्विगुणित हो गई। जोजो के शब्दों का जादुई असर हुआ उन पर। "थैंक्स माई डियर" ही कह सकीं वह। जोजो ने उठकर उन्हें पानी पिलाया और उनकी गोदी में सिर रखकर बैठ गई। मदर उसके घुँघराले बालों में अपनी उँगलियाँ फिराने लगीं।

"मदर, फादर हमेशा कहते हैं कन्फेस करने को, तो मैं सोचती थी फादर ऐसा क्यों कहते हैं .. कन्फेशन तो गलतियों का होता है, बुरी आदतों का होता है, पापों का होता है। मुझे लगता था मैंने कभी कोई गलती की ही नहीं, कोई बुरी आदत भी नहीं है मुझमें। अब सोचती हूँ कि शाम की प्रेयर के बाद प्रभु से कन्फेस कर लूँगी .. बहुत दुख दिया है मैंने आपको, मदर .. माँ"

"नहीं बच्चे, माँ केवल तभी दुखी होती है जब उसका बच्चा दुख में हो, माँ तो बच्चे की एक झलक देखकर ही प्रफुल्लित हो जाती है।"

"आप सचमुच महान हैं माँ।"

जोजो के मुँह से बार-बार अपने लिए माँ का सम्बोधन सुनकर मदर भावुक हो उठीं। उनके लिए जब अपनी भावनाएँ छुपा पाना मुश्किल हो गया, तो बोली - "आज कॉलेज नहीं जाना क्या?"

"आज की छुट्टी, आज मैं पूरा दिन आपके साथ बिताना चाहती हूँ, यहाँ इसी तरह बैठे-बैठे" जोजो फिर कुछ सोचते हुए बोली - "आपके मन में भी बहुत से प्रश्न होंगे लेकिन आप पूछ नहीं रही हैं, आपको कितना विश्वास है अपनी बेटी पर?"

"विश्वास और प्रेम दो ही चीजें इस दुनिया की अमूल्य निधि हैं, जिसके पास ये दोनों निधियाँ हैं उससे अधिक धनी कोई और व्यक्ति इस दुनिया में नहीं है .. सच है मैं बहुत कुछ जानना चाहती थी तुमसे, पर अब मैं तुम्हें दुखी देखना नहीं चाहती, तुम सदा खुश रहो मेरे बच्चे।"

"लेकिन माँ से कुछ छुपाना भी नहीं चाहिए .. मैंने अपनी जिंदगी से बहुत कुछ सीखा है .. सब कुछ शायद मैं आपको खुलकर बता भी नहीं सकूँगी, पर आपका जानना भी जरूरी है" जोजो उठी और अपने कमरे में जाकर अपनी डायरी उठा लाई - "इसमें आपको सारे प्रश्नों के उत्तर मिल जाएँगे .. आप जब समय मिले पढ़िए इसे .. मैं ब्रेकफास्ट तैयार करती हूँ।"

जोजो किचन में चली गई। डायरी का पहला पृष्ठ खोलते हुए मदर रचैल के हाथ काँप रहे थे। उन्होंने ईशू का स्मरण किया और पहला पन्ना पढ़ने लगी।

अक्टूबर ७, २०१२ : मेरा १०वाँ जन्मदिन। पहली बार मेरे मन में आया कि मेरे जन्म की ये तारीख सही भी है या नहीं। मेरी दोस्त रोजी ने समझाया तुम्हें इससे क्या फर्क पड़ता है। फादर कबसे तुम्हारा जन्मदिन इसी दिन मनाते आ रहे हैं फिर इस बार इतना क्यूँ सोचना, इस बारे में। शाम को सबने मिलकर बहुत एंजॉय किया।

अक्टूबर ९, २०१२ : मेरी जिंदगी का सबसे खराब दिन है यह, मैं कमरे में पड़ी-पड़ी बहुत देर तक फूट-फूट कर रोती रही। शाम को पहली बार सरोवर के किनारे बैठ कर दो घंटे से अधिक समय तक सोचती रही। बच्चियों की शिक्षा के पक्ष में आवाज उठाने के लिए तालिबानी आतंकवादियों ने १५ साल की लड़की मलाला युसुफजई के सिर में गोली मार दी। मैं उस दृश्य की कल्पना करके ही सिहर गई थी। क्यों जन्म लेती हैं लड़कियाँ ऐसे संसार में जहाँ उनको पढ़ने के लिए भी संघर्ष करना पड़े।

अक्टूबर १५, २०१२ : एक सप्ताह लग गया मुझे इस सदमे से बाहर आने में। आज रोजी ने मुझे यू-ट्यूब पर मलाला पर बनी फिल्म "ए स्कूलगर्ल्स ओडिसी" दिखाई। मलाला को सलाम करने का जी चाहा। यह फिल्म दिखाने के लिए मैंने रोजी के गालों को चूम लिया।

फिर कुछ खाली तारीखें या एक-दो पंक्तियों में सामान्य सी बातें। दिसम्बर की १६ तारीख पर उनकी नजर ठहर गई। बड़ी सी दास्तान लिखी थी उस पन्ने पर। दिल्ली रेप-कांड का दिन था वह। निर्भया कांड के नाम से जो वर्षों सुर्खियों में रहा था। जोजो के शब्दों में "मुझे जब पता चला कि इस घिनौने कार्य को अंजाम देने वालों में नाबालिग भी शामिल हैं तो मुझे कितना आघात पहुँचा है कह नहीं सकती। शेम ऑन यू।"

"मुझे उदास देखकर फादर ने आज फिर कहा है कि ईशू के सामने जाकर कन्फेस करो, सारी परेशानी दूर हो जाएगी। अब फादर से कैसे कहूँ कि ऐसी दुनिया ईशू बनाते ही क्यों हैं।" फिर कुछ खाली तारीखें या यार-दोस्तों की बातें। शैतानियों का वर्णन, स्कूल फंक्शन का उल्लेख, रोजी की सिंगिंग की तारीफ और क्लास में प्रथम आने की खुशी का जिक्र। अगले बर्थ डे पर डेनिस का विशेष उल्लेख। डेनिस उसके साथ ही पढ़ता था और बेसबाल का अच्छा खिलाड़ी था। जोजो लिखती है - "डेनिस ने मुझे ग्रीटिंग कार्ड और कैडबरी की बड़ी चॉकलेट गिफ्ट में दी, मुझे अच्छा लगा। रोजी भी मेरे लिए पेस्टी लेकर आई थी जिसे हम तीनों ने मिलकर खाया। दोपहर के केक-कटिंग, सिंगिंग व डांस कार्यक्रम को सबने खूब एंजॉय किया।"

"अगले दिन रोजी ने यह कहकर मेरे होश उड़ा दिए कि डेनिस से दूर रहा करो, वह अच्छा लड़का नहीं है।" उसने रोजी की छातियों पर हाथ रखते हुए कहा था, 'टेबल टेनिस की गेंद सरीखी हैं अभी' और बेशर्मी से हँस दिया था। कितना पीड़ादायी होता है ऐसी स्थितियों से गुजरना और फिर मन को वापस स्थिर कर पाना।

कई दिनों तक मेरे दिमाग में रोजी के कहे शब्द गूँजते रहे थे। मेरे बारे में भी उसके इतने ही गंदे खयालात होंगे। कई दिनों से बार-बार मन में एक ही बात हलचल मचा रही है कि १२-१३ साल के लड़के के मन में ऐसी गंदगी कहाँ से आती है .. क्या हर मर्द औरत को ऐसी ही गंदी दृष्टि से देखता है? औरत उसके लिए केवल उपभोग की वस्तु है और कुछ नहीं .. मेरा कोई भाई नहीं है और न ही पिता का सान्निध्य मिला है मुझे, मैं कभी उनके वात्सल्य और प्रेम को समझ ही नहीं पाऊँगी। मुझे पहले ही डेनिस के बारे में समझ जाना चाहिए था जब वह बार-बार बेढंगे जोक सुना कर मुस्कराने लगता था। एक बार तो उसने सुनिधि मैडम व बैजामिन सर के करैक्टर पर उँगली उठाई थी। मुझे उससे तभी दूर हो जाना चाहिए था पर गलती हुई है मुझसे .. लेकिन क्या ये सच में मेरी गलती है या इस समाज के विद्वेष होते चेहरे की खौफनाक सच्चाई इस तरह सामने आई थी .. मैं जितना सोचती हूँ उतने ही प्रश्न मुँह बाएँ खड़े हो जाते हैं।" पढ़ते हुए मदर की आँखें गीली हो गईं। नैपकिन से पोंछते हुए मदर ने पन्ना पलट दिया।

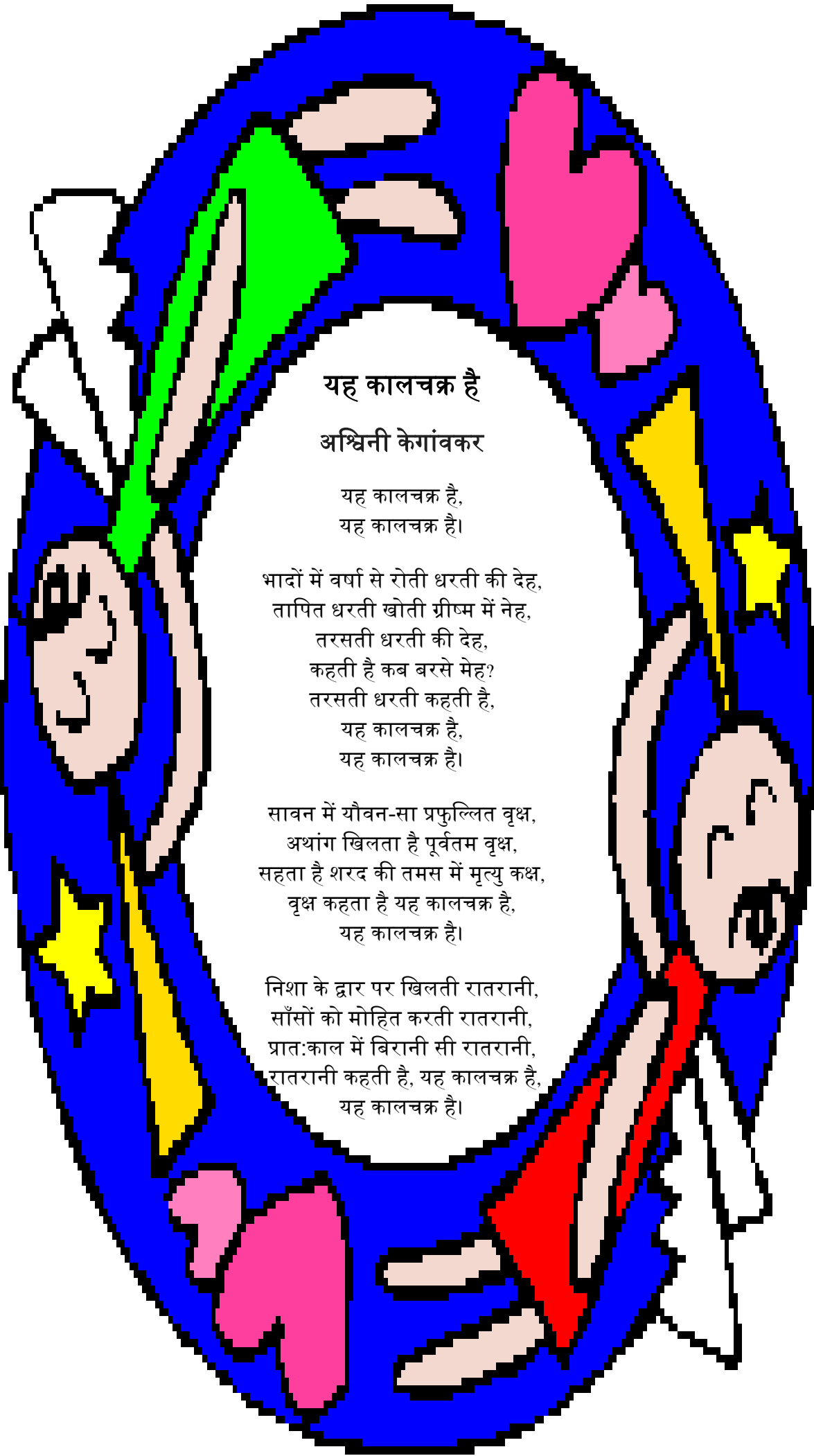
इसके बाद उदास होने की अनेक घटनाओं का जिक्र था जिनमें मुम्बई, कठुआ और उन्नाव रेप-कांड से लेकर हाल में उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान में मासूमों के संग हुई नृशंसता की कहानियाँ थी और उन्हें लेकर राजनेताओं के घटिया बयान। दो दिन पहले की पोस्ट थी वह। मदर पढ़ने लगी - "पिछले दस-पंद्रह दिनों में घटी घटनाओं को कोई दलित और सवर्ण का मुद्दा बनाना चाहता है तो कोई ठाकुर और ब्राह्मणों के विरुद्ध षडयंत्र निरूपित करने में व्यस्त है तो कोई हिंदु-मुसलमान का रंग देने की कोशिश में जुटा हुआ है। एक राजनेता बोल रहा है कि आपको उत्तरप्रदेश में हुए बलात्कार दिखते हैं पर राजस्थान के बलात्कारों पर चुप रहते हैं। बंद करो यह बकवास। घृणा होती यह सब देख-सुन कर। कितने अमानवीय हो गए हैं हम .. किसी को लड़की का रौंदा हुआ शरीर और लहू-लुहान आत्मा दिखाई नहीं दे रही है। धिक्कार है तुम्हें। शर्म आती है तुम्हें देखकर। खुद को इंसान समझने की शक्ति नहीं रह गई है मेरे पास।"

"मन बहुत विचलित है। सरोवर किनारे आज तीन घंटे से अधिक बैठी रही पर चैन नहीं मिला। कल रविवार है। नील से भेंट होगी तो शायद मन की बेचैनी कुछ कम हो जाए। उसके साथ समय बिताना अच्छा लगता है मुझे। कल मदर से कहकर उसके साथ मार्केट जाकर शॉपिंग करके आऊँगी।"

इसके बाद थी अंतिम पोस्ट - "रात के तीन बजे हैं। दिन में नील के साथ सारी शॉपिंग की। इस बीच वह कई बार घड़ी की ओर देख चुका था, लगा उसे जल्दी है। शॉपिंग करके मैं किसी रेस्त्रां में बैठकर कॉफी पीना चाहती थी कि नील मेरा हाथ अपने हाथ में पकड़ते हुए बोला - "जो, घर चलते हैं। आज ममा भी अपने किसी दोस्त के साथ गई है। कोई नहीं है घर पर .. अकेले होंगे हम दोनों .. समझ रही हो न मैं क्या कहना चाह रहा हूँ।" सुनकर मैं हतप्रभ रह गई, कौन-सा नील बोल रहा है यह .. मेरा दोस्त या केवल मर्द .. दोस्त से पहले वह भी केवल एक मर्द है, यह सिद्ध कर दिया है उसने। कानों पर विश्वास नहीं हुआ .. ऐसी बेशर्मी, ऐसी धृष्टता और वो भी इतनी बेबाकी से। मैंने उसका हाथ झटक दिया और चली आई। वह आवाज देता रहा .. मैं यंत्रवत् चलती रही .. इसके बाद मुझे ध्यान ही नहीं कि क्या हुआ ? उसकी पसंद से खरीदे रंग और ब्रश का कैरीबैग हाथ से कब छूट गया .. कहाँ गिर गया .. कब यहाँ पहुँची और सो गई .. अब याद भी नहीं करना चाहती वह सब।"

"भूख भी लग रही है। मदर सो रही हैं, उनकी नींद में विघ्न नहीं डाल सकती। याद आता है कि बैग में डार्क चॉकलेट रखी है वही निकाल कर खा रही हूँ। अब मैं भयमुक्त हूँ .. सारा डर, सारी उदासी जाती रही। इस दुनिया में जीना है तो डर और उदासी की कोई जगह नहीं होनी चाहिए जिंदगी में। निर्बल मन साथ जानवरों के बीच कोई नहीं रह सकता। मैं कल मदर को सब बता दूँगी और ईशू से भी कन्फेस कर लूँगी कि मैंने लोगों को पहिचानने की भूल की है। इस भूल के लिए क्षमा करें।" मदर ने भरी आँखों से डायरी बंद करके जोजो की ओर देखा जो ब्रेकफास्ट तैयार कर डायनिंग टेबल पर लगा रही थी।





यह कालचक्र है

अश्विनी केगांवकर

यह कालचक्र है,  
यह कालचक्र है।

भादों में वर्षा से रोती धरती की देह,  
तापित धरती खोती ग्रीष्म में नेह,  
तरसती धरती की देह,  
कहती है कब बरसे मेह?  
तरसती धरती कहती है,  
यह कालचक्र है,  
यह कालचक्र है।

सावन में यौवन-सा प्रफुल्लित वृक्ष,  
अथांग खिलता है पूर्वतम वृक्ष,  
सहता है शरद की तमस में मृत्यु कक्ष,  
वृक्ष कहता है यह कालचक्र है,  
यह कालचक्र है।

निशा के द्वार पर खिलती रातरानी,  
साँसों को मोहित करती रातरानी,  
प्रातःकाल में बिरानी सी रातरानी,  
रातरानी कहती है, यह कालचक्र है,  
यह कालचक्र है।



वृष्टि की राह में शुष्क सरिता,  
क्षणों क्षणी लालायित सरिता,  
भादों में अतिवृष्टि से क्रन्दित सरिता,  
सरिता कहती है, यह कालचक्र है,  
यह कालचक्र है।

पूनम का तेजस्वी चंद्र भी होता अर्द्ध,  
खोकर अपनी दमक होता है अर्द्ध,  
आमस में विलुप्त हो सह अंतर्द्वंद,  
चंद्र कहता है यह कालचक्र है,  
यह कालचक्र है।

हर उदय का अस्त है,  
हर दिन की निशा है,  
फिर क्यों यह अहंकार है,  
यह कालचक्र है,  
यह कालचक्र है।

## हावड़ा - मेदिनीपुर की लास्ट लोकल ....!!

तारकेश कुमार ओझा

महानगरों के मामले में गाँव-कस्बों में रहने वाले लोगों के मन में कई तरह की सही-गलत धारणाएँ हो सकती हैं। जिनमें एक धारणा यह भी है कि देर रात या मुँह अँधेरे महानगर से उपनगरों के बीच चलने वाली लोकल ट्रेनें अमूमन खाली ही दौड़ती होंगी। पहले मैं भी ऐसा ही सोचता था। लेकिन एक बार अहले सुबह कोलकाता पहुँचने की मजबूरी में तड़के साढ़े-तीन बजे की फर्स्ट लोकल पकड़ी तो मेरी धारणा पूरी तरह से गलत साबित हुई। खुशगवार मौसम के दिनों में यह सोच कर ट्रेन में चढ़ा कि इतनी सुबह गिने-चुने यात्री ही ट्रेन में होंगे और मैं आराम से झपकियाँ लेता हुआ मंजिल तक पहुँच जाऊँगा। लेकिन वास्तविकता से सामना हुआ तो लेटने की कौन कहे डिब्बों में बैठने की जगह भी मुश्किल से मिली। हावड़ा से मेदिनीपुर के लिए छूटने वाली लास्ट लोकल का मेरा अनुभव भी काफी बुरा और डराने वाला साबित हुआ। दरअसल यह नब्बे के दशक के वाइ-टू-के की तरफ बढ़ने के दौरान की बात है। अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश में मैं लगातार उलझता जा रहा था। हर तरफ से निराश-हताश होकर आखिरकार मैंने भी अपने जैसे लाखों असहाय व लाचार लोगों की तरह दिल्ली-मुम्बई का रुख करने का निश्चय किया। मोबाइल तो छोड़िए टेलीफोन भी तब विलासिता की वस्तु थी। लिहाजा मैंने अपने कुछ रिश्तेदारों को पत्र लिखा कि मैं कभी भी रोजी-रोजगार के लिए आपके पास पहुँच सकता हूँ। मेहनत-मजदूरी के लिए आपके मदद की जरूरत पड़ेगी। जवाब बस एकाध का ही आया। सब की यही दलील थी कि छोटा-मोटा काम भले मिल जाए, लेकिन महानगरों की कठोर जिंदगी शायद तुम न झेल पाओगे। न आओ तो ही अच्छा है।

इससे मेरी उलझन और बढ़ गई। हर पल जेहन में बुरा ख्याल आता कि अब मुझे भी किसी बड़े शहर में जाकर दीवार फिल्म के अमिताभ बच्चन की तरह सीने में रस्सा बाँध कर बोझा ढोना पड़ेगा या फिर किसी मिल में मेहनत-मजदूरी करनी होगी।

श्रमसाध्य कार्य की मजबूरी से ज्यादा व्यथित मैं अपनों से दूर जाने की चिंता से था। क्योंकि मैं शुरू से होम-सिकनेस का मरीज रहा हूँ। निराशा के इस दौर में अचानक उम्मीद की लौ जगी। सूचना मिली कि कोलकाता से एक बड़े धनकुबेर का अखबार निकलने वाला है। अखबार पहले सांध्य निकलेगा। लेकिन जैसे ही प्रसार एक निश्चित संख्या तक पहुँचेगा वह आम अखबारों की तरह सुबह निकला करेगा। पैसों की कोई कमी नहीं लिहाजा अखबार और इससे जुड़ने वालों का भविष्य सौ फीसद उज्ज्वल होगा।

संयोग से अखबार के सम्पादक व सर्वेसर्वा मेरे गहरे मित्र बने, जिनसे संघर्ष के दिनों से दोस्ती थी। लिहाजा मैंने उनसे सम्पर्क साधने में देर नहीं की। उन्होंने भी मेरी हौसला-आफजाई करते हुए तुरंत खबरें भेजना शुरू करने को कहा। उस काल में मैं सीधे तौर पर किसी अखबार से जुड़ा तो नहीं था। लेकिन अक्सर लोग मुझे तरह-तरह की सूचनाएँ इस उम्मीद में दे जाते थे कि कहीं-न-कहीं तो छप ही जाएगी। ऐसी ही सूचनाओं में एक सामाजिक संस्था से जुड़ी खबर थी। जिसके पदाधिकारियों ने कई बार मुझसे सम्पर्क किया।

मेरे यह कहने पर कि खबर जल्द प्रकाशित होने वाले अखबार के डमी कॉपी में छपी है, उन्होंने इसकी प्रति हासिल करने की इच्छा जताई तो मेरे लिए यह मसला प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया।

तभी मुझे सूचना मिली कि अखबार जल्द निकलने वाला है। मैं आकर डमी कॉपी ले जाऊँ। इस सूचना में मेरे लिए दोहरी खुशी की सम्भावना छिपी थी। अब तो यदि सचमुच बड़े समूह का अखबार निकला तो मैं



अपनी मिट्टी से दूर जाने की भीषण त्रासदी से बच सकता था और दूसरा इससे दम तोड़ते मेरे करियर को ऑक्सीजन का नया डोज मिल सकता था। बस कहीं से सौ रुपए का एक नोट जुगाड़ा और अखबार की डमी कॉपियाँ लेने घनघोर बारिश में ही कोलकाता को निकल पड़ा।

रास्ते में पड़ने वाले सारे स्टेशन मानो बारिश में भीगने का मजा ले रहे हों। कहीं-कहीं रेलवे ट्रैक पर भी पानी जमा होने लगा था। जैसे-तैसे मैं दफ्तर पहुँचा तो वहाँ का माहौल काफी उत्साहवर्द्धक नजर आया। सर्वेसर्वा से लेकर हर स्टाफ ने मेरा हौसला बढ़ाते हुए कहा कि अपन अब सही जगह पर आ गए हैं... भविष्य सुरक्षित होने वाला है... अब तो बस मौज करनी है।

उदास चेहरे पर फीकी मुस्कान बिखरते हुए मैं मन ही मन बड़बड़ाता ....भैया मुझे न तो भविष्य सुरक्षित करने की ज्यादा चिंता है और न ऐश करने का कोई शौक... मैं तो बस इतना चाहता हूँ कि कुछ ऐसा चमत्कार हो जाए, जिससे मुझे अपनों से दूर न होना पड़े। क्योंकि मैं किसी भी सूरत में अपना शहर नहीं छोड़ना चाहता था।

रिमझिम बारिश के बीच साँझ रात की ओर बढ़ने लगी... बेचैनी ज्यादा बढ़ती तो मैं बाहर निकल जाता और फुटपाथ पर बिकने वाली छोटी भाड़ की चाय पीकर फिर अपनी सीट पर आकर बैठ जाता। मेरे दिल दिमाग में बस डमी कॉपियों का बंडल घूम रहा था। पूछने पर बार-बार यही कहा जाता रहा कि बस छप कर आती ही होगी। देर तक कुछ नहीं आया तो लगा मैं फिर किसी धोखे का शिकार हो रहा हूँ। बारिश के बीच घर लौटने की चिंता से मेरा तनाव फिर बढ़ने लगा। आखिरकार एक झटके से मैं उठा और बाहर निकल गया। किसी से कुछ कहे बगैर हावड़ा जा रही बस में सवार हो गया। लेकिन मुश्किलें यहाँ भी मेरा पीछा नहीं छोड़ रही थीं। इतनी रात गए हावड़ा-मेदिनीपुर की जिस लॉस्ट लोकल में मैं कुछ आराम से यात्रा करते हुए भविष्य को लेकर चिंतन-मनन की सोच रहा था, उसमें भी ठसाठस भीड़ थी। लोग डिब्बों के बाहर तक लटके हुए थे। कोलकाता महानगर को ले एक बार फिर मेरी धारणा गलत साबित हुई। लोग डिब्बों के बाहर तक लटके हुए थे। किसी तरह एक डिब्बे में सवार हुआ तो वहाँ यात्री एक-दूसरे पर गिरे पड़ रहे थे। इस बात को लेकर होने वाली कहा-सुनी और वाद-विवाद यात्रा को और भी कष्टप्रद बना रहा था। ट्रेन एक के बाद एक स्टेशन पर रुकती हुई आगे बढ़ रही थी, लेकिन यात्री कम होने के बजाय बढ़ते ही जा रहे थे। बागनान स्टेशन आने पर डिब्बा कुछ खाली हुआ तो मुझे बैठने की जगह मिल पाई। देउलटि आते-आते कुछ और मुसाफिर डिब्बे से उतर गए तो मैं यह सोच कर बेंच पर लेट गया कि दिन भर की थकान उतारते हुए भविष्य की चिंता करूँगा। मैं सोचने लगा कि ट्रेन तो खैर देर-सबेर अपनी मंजिल पर पहुँच जाएगी लेकिन अपनी मंजिल का क्या होगा। क्या कोई रास्ता निकलेगा। इस बीच कब मुझे झपकी लग गई पता ही नहीं चला। नींद टूटने पर बंद आँखों से ही मैंने महसूस किया कि ट्रेन किसी पुल के ऊपर से गुजर रही है।

हालाँकि डिब्बे में छाई अप्रत्याशित शांति से मुझे अजीब लगा। आँख खोली तो सन्न रह गया। पूरा डिब्बा खाली। जीवन की तरह यात्रा की भी अजीब विडम्बना कि जिस ट्रेन के डिब्बों में थोड़ी देर पहले तिल धरने की जगह नहीं थी, वहीं अब पूरी की पूरी खाली। आस-पास के डिब्बों का टोह लिया तो वहाँ भी वही हाल। लुटने लायक अपने पास कुछ था नहीं, लेकिन बारिश की काली रात में एक डिब्बे में अकेले सफर करना खतरनाक तो था ही। लिहाजा ट्रेन के एक छोटे से स्टेशन पर रुकते ही मैं डिब्बे से उतर गया और किसी हॉरर फिल्म के किरदार की तरह बदहवास इधर-उधर भागने लगा। क्योंकि हर डिब्बा लगभग खाली था। इंजन के बिल्कुल पास वाले एक डिब्बे में दो खाकी वर्दीधारी असलहा लिए बैठे थे। मैं उसी डिब्बे में चढ़ गया और जैसे-

तैसे घर भी पहुँच गया। इसके बाद के दिन मेरे लिए बड़े भारी साबित हुए। लेकिन वाकई जिंदगी इम्तहान लेती है। एक रोज कहीं से लौटा तो दरवाजे पर वहीं बंडल पड़ा था, जिसे लेने मैं बरसात की एक रात कोलकाता गया था और कोशिश करके भी हासिल नहीं कर पाया। बंडल के साथ एक पत्र भी संलग्न था, जिसमें



अखबार शीघ्र निकलने और तत्काल सम्पर्क करने को कहा गया था। इस घटना के बाद वाकई मेरे जीवन को एक नई दिशा मिली...

## पुष्प विडम्बना

अमित कुमार कौशल

पुष्प मैं, अपनी व्यथा सुनाऊँ,  
नारी के मन को क्यों ललचाऊँ?  
मेरे रूप का कैसा मुझे अहंकार?  
बाग से तोड़ लिया मुझे हर बार?

मेरी खुशबु में मैं महका जाऊँ,  
पूजा निष्ठा से जोड़ा खुद को पाऊँ,  
इश्क, मुहब्बत क्या मेरा इजहार?  
मैं भी हूँ जीवित, है जीने का मुझे अधिकार।

माला रूप में प्रभु कर लो मुझे स्वीकार,  
शून्य हो गया मैं प्रभु तुझे निहार,  
कभी-कभी आँखों में मेरे आते आँसू,  
क्यों शव पर हूँ विराजित? जीवन से जिज्ञासु।

तोड़ मुझे क्यों तुम इतराते ?  
काँटों की है रक्षा न मुझे बचाते,  
जीना चाहूँ मेरा तुच्छ है स्वार्थ,  
तोड़ मुझे पापी न हो रे पार्थ!

जीवन मेरा बस सौंदर्य की छाया,  
मृत घोषित पलटी मेरी ही काया,  
कैसा था सौन्दर्य? कैसी थी माया?  
अंततः प्रभु चरणों में खुद को पाया।

## बुनी हुई रस्सी

भवानी प्रसाद मिश्र

बुनी हुई रस्सी को घुमाएँ उल्टा  
तो वह खुल जाती है  
और अलग-अलग देखे जा सकते हैं  
उसके सारे रेशे।

मगर कविता को कोई  
खोले ऐसा उल्टा  
तो साफ नहीं होंगे हमारे अनुभव  
इस तरह  
क्योंकि अनुभव तो हमें  
जितने इसके माध्यम से हुए हैं  
उससे ज्यादा हुए हैं दूसरे माध्यम से  
व्यक्त वे जरूर हुए हैं यहाँ।

कविता को  
विखरा कर देखने से  
सिवा रेशों के क्या दिखता है!  
लिखनेवाला तो  
हर बिखरे अनुभव के रेशे को  
समेटकर लिखता है!

## संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा के रूप में मिले हिंदी को स्थान

गौरीशंकर वैश्य “विनम्र”

भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया है। वस्तुतः हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसे चाहे सरकारी पद मिले या न मिले, यह हर भारतवासी के हृदय में रची-बसी है। भारत, क्षेत्रफल तथा जनसंख्या की दृष्टि से ही नहीं, भाषाओं की दृष्टि से भी एक उपमहाद्वीप है, यहाँ भाषा और बोलियों की संख्या सैकड़ों में है। बाइस भाषाएँ तो इतनी प्रमुख हैं कि भारतीय संविधान में क्षेत्रीय भाषा के रूप में इन्हें स्वीकार किया गया है।

यह विवाद का विषय हो सकता है कि विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या कितनी है और वह किस स्थान पर है। यदि कोई अँग्रेजी, स्पेनिश या चीनी को सर्वाधिक प्रचलित भाषा बताता है तो यह कथन सत्य कैसे माना जा सकता है। डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल के अनुसार हिंदी में यदि उर्दू को भी सम्मिलित कर लिया जाए (क्योंकि उर्दू की उत्पत्ति भारत में हुई) तो हिंदी जानने वालों की संख्या एक अरब से अधिक है। यह संख्या चीनी भाषा से १२.५ करोड़ अधिक है। इस प्रकार हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। इस दृष्टि से हिंदी की प्रासंगिकता संयुक्त राष्ट्र में मान्यताप्राप्त छह भाषाओं (अँग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, चीनी, स्पेनिश और अरबी) से किसी स्तर से कम नहीं है। इन छह भाषाओं को संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्रदान की जा चुकी है। अस्तु, संख्या बल से हिंदी भी संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने के लिए सर्वथा सक्षम और समर्थ है।

संयुक्त राष्ट्र में महाशक्तियों की भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। स्पेनिश और अरबी बोलने वाला कोई देश महाशक्ति नहीं है परंतु इन भाषाओं को बोलने वाले देशों की संख्या बहुत बड़ी है और उन देशों में आज भी विश्व राजनीति का मुख्य संचालक पेट्रोल मिलता है। आज हिंदी के पास प्रबल तर्क है कि भारत विश्व में एक महाशक्ति के रूप में तेजी से उभर रहा है, हिंदी २२ देशों में लगभग १०० करोड़ से अधिक लोग बोलते हैं, अतः जनतंत्र की दृष्टि से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने में और विलम्ब नहीं होना चाहिए। भारत अपने बलबूते और शक्ति-सामर्थ्य से महाशक्ति बनने की दिशा में प्रयासरत है, हिंदी को विश्व भाषा बनाने का प्रयास अवश्य सफल होगा।

संयुक्त राष्ट्र को हमें 'जादू की छड़ी' समझने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उसकी स्थिति और चरित्र में निष्पक्षता का अभाव दिख रहा है। वह अपनी विश्वसनीयता और अस्तित्व की रक्षा के लिए स्वयं जूझ रहा है। पिछले दो दशकों में महाबली अमेरिका नितान्त अपने व्यक्तिगत हितों के लिए इस विश्व संस्था का दुरुपयोग करता आ रहा है और उसकी साख रसातल में जा चुकी है। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र द्वारा हिंदी के प्रति आँखें मूंदे रहना भारत के प्रति भेदभावपूर्ण रवैये का द्योतक है। यह भेदभाव हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाए जाने के प्रति ही नहीं, अपितु सुरक्षा परिषद की सदस्यता के विंदु पर भी है। अतः भारत से जुड़े अन्य अनेक प्रकरणों में भी संयुक्त राष्ट्र तटस्थ भूमिका निभा पाएगा, इसमें संदेह है, तथापि हमें हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए प्राण-प्रण से अनवरत उद्योग करते रहने की आवश्यकता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को वैधानिक भाषा का दर्जा दिलाने की माँग वर्तमान परिस्थिति में सर्वथा उचित है। विश्व हिंदी सम्मेलन करने के पीछे मुख्य प्रेरणा भी यही थी कि हिंदी को विश्व भाषा के रूप में कैसे स्थापित किया जाए। इसका एकमात्र निदान यही है कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र में यथाशीघ्र स्वीकार्यता प्रदान की जाए। पिछले कई दशकों से लगातार हर विश्व हिंदी सम्मेलन में यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाता रहा है।

भारत के कवि हृदय पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने विश्व मंच पर हिंदी का जयघोष करते हुए कहा था - गूँजी हिंदी विश्व में, स्वप्न हुआ साकार

राष्ट्र संघ के मंच से, हिंदी की जयकार

हिंदी की जयकार, हिंद हिंदी में बोला



देख स्वभाषा प्रेम, विश्व अचरज में डोला

इन पंक्तियों द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच से, हिंदी की जयकार की गई तथा असंख्य हिंदी अनुरागियों की आँखों में झिलमिलाते उस सपने को साकार होते हुए दिखाया गया है, जो उन्होंने हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं भाषा बनने के रूप में पाल रखा है। हम स्वप्न देखेंगे, तभी तो वे साकार होंगे। इस पहल को आगे बढ़ाने का श्रेय भारत के वर्तमान यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाता है, जिन्होंने सितंबर २०१४ में अपने अमेरिकी दौरे के अंतर्गत न केवल संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में भाषण दिया, अपितु अनेक सभाओं को हिंदी में ही सम्बोधित किया। सूरीनाम में सम्पन्न हुए सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत ने जिस दृढ़ता से संयुक्त राष्ट्र की सातवीं भाषा हिंदी को बनाए जाने की वकालत की, इससे हिंदी की स्वीकार्यता और प्रासंगिकता विश्व स्तर पर सिद्ध हुई और हिंदी को अपने लक्ष्य तक पहुँचने की सम्भावनाएँ बढ़ी थीं। इसी प्रकार सभी विश्व हिंदी सम्मेलनों में, विदेशों में हिंदी शिक्षण समस्याएँ और समाधान, विदेशों में हिंदी साहित्य सर्जन, हिंदी के प्रचार-प्रसार में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका, वैश्वीकरण, मीडिया और हिंदी, हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी फिल्मों की भूमिका, साहित्य में अनुवाद की भूमिका सदृश ज्वलंत विषयों पर विशद सम्भाषण और चर्चाएँ हुई हैं। इससे समस्त विश्व का ध्यान हिंदी की ओर आकृष्ट हुआ है और पर्याप्त समर्थन मिला है।

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी की अनिवार्यता की बात से ही हिंदी प्रेमियों के मन में हर्षानुभूति होने लगती है। हिंदी में वे सारी विशेषताएँ हैं जो इसको वैश्विक भाषा बनने की सामर्थ्य और क्षमता प्रदान करती हैं। इधर हिंदी ने अपने कलेवर बदले हैं और समय के साथ चलने का कला - कौशल सीख लिया है। वह बाजार की भाषा बन चुकी है, विज्ञान, प्रौद्योगिकी तकनीक और अनुसंधान की भाषा बन चुकी है। साहित्य की शीर्ष भाषा तो वह पहले से थी और आज भी है। अंतर्जाल अर्थात् इंटरनेट से जुड़े उस भ्रम को भी हिंदी तोड़ चुकी है। जिस तकनीक पर केवल अंग्रेजी अपना वर्चस्व समझ रही थी। अपनी सम्प्रेषणीयता के कारण हिंदी व्यवहार की भाषा बन चुकी है और सम्पूर्ण विश्व के द्वारा अपनाई जा रही है।

हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने के लिए संयुक्त राष्ट्र का ठप्पा लगना आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी की अनिवार्यता उसका लोकतांत्रिक अधिकार है और उसे यह अधिकार मिलना ही चाहिए। इसके लिए हिंदी अनुरागी जिस ढंग से प्रतिबद्ध हैं, उस प्रतिबद्धता से ही हमारी सरकार को भी तत्परता दिखानी होगी। संयुक्त राष्ट्र पर हिंदी का झंडा फहराने के लिए भारतवासियों को भी हिंदी के प्रति समर्पण भाव प्रदर्शित करना होगा।

थोड़ा रुककर विचार करें, तो आज की स्थिति अपने घर में ही संतोषजनक नहीं है, दृश्य ऐसा है कि हिंदी हँस रही है, किंतु हिंदी वाले रो रहे हैं। हिंदी फैल रही है, किंतु उसके बोलने वाले सिकुड़ रहे हैं। अंग्रेजी आज भी शिक्षा का लोकप्रिय माध्यम बनी हुई है। नन्हे-मुन्हे शिशुओं को शिक्षा अपनी मातृभाषा में नहीं, अंग्रेजी में लेनी पड़ रही है। इसने हिंदी को 'हिंग्लिश' बना डाला है। अतः यह नितांत आवश्यक है कि हम अंग्रेजी का पूर्ण बहिष्कार करें तथा अपने देश में हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान देकर महिमामंडित करें, जिससे वैश्विक समुदाय को हमारी ओर उँगली उठाने का अवसर न मिले। विश्व मंच पर हिंदी को स्थापित करने के लिए भारतीय संविधान संकल्पबद्ध है तथा सम्यक एवं समवेत रूप से प्रयत्नशील होकर ही हिंदी को विश्व भाषा बनाने का स्वप्न साकार होगा। हम अपने कार्य-व्यवहार में हिंदी अपनाने का दृढ़ संकल्प आज ही लें।



## स्वाधीनता का सूर्य

देवराज

नष्ट करे  
हमारे भीतर छिपे  
पराधीनता के अँधेरे को  
जला डाले  
हमारे अंतर्मन की  
ऊर्जस्वी तार्किक चेतना पर  
निरंतर हमलावर  
कायरता को  
धर्मांधता को  
असहिष्णुता को,  
स्वाधीनता का सूर्य  
उगाए  
हमारी आत्मा के खेत में  
प्रतिरोध की भाषा  
ताकि  
लड़ाई में कूद सकें हम  
निडर भाव से  
अन्याय के विरुद्ध,  
स्वाधीनता का सूर्य  
जगाए  
सच्चा राष्ट्र-प्रेम  
हममें  
जन-मन में  
भर दे  
अलंकृत कोमल मानवता  
अनुकरणीय मनुष्यता  
चरित्र में  
जीवन में।



## श्याम वर्ण के दर्पण

डॉ. आरती 'लोकेश'

“नेमु! दो कप चाय ले आ गार्डन में।” अपने घुँघराले बालों को लपेटकर जूड़े का रूप देते हुए स्वर्णलेखा सीढ़ियों से उतरी और पिछले चालीस बरस की आदत के अनुसार रसोई के आगे से निकलते हुए आया को आदेश दिया। नेमुनि अचम्भित-सी रसोई से बाहर आई। तब तक स्वर्णलेखा ने एक झाड़न अपने हाथ में ले लिया था।

“गार्डन की मेज तो साफ़ की नहीं होगी तूने।” स्वर्णलेखा ने कृत्रिम नाराज़गी से नेमुनि को देखा और फिर एक दृष्टि हॉल के बाहर गार्डन में रखी दो कुर्सियों के मध्य विराजी मेज पर डाली। नेमुनि ने उसके हाथ से झाड़न ले लिया और हॉल का दरवाज़ा खोलने लगी।

“बोला न! मेज से धूल मैं झाड़ दूँगी। तू जा... दो चाय का पानी रख गैस पर।” स्वर में तलख दृढ़ता उभर आई थी। वह हॉल के दरवाज़े को थोड़ा और खिसकाकर बाहर आई और फुर्ती से लकड़ी की बेमिसाल कारीगरी वाली मेज पर बिखरे अखबार के पन्ने और मैगज़ीन सँभालने लगी।

“दो चाय? बीबी जी!” नेमुनि भी पीछे-पीछे ही चली आई। वह तो चाय पीती न थी।

स्वर्णलता के हाथ से लेकर अखबार तो उसने सँभाल लिए थे किंतु इतनी मजबूती वह अपने हाथों में न पाती थी कि अपनी बीबीजी को सँभाल सके। वह आँखें फाड़े उसे ताक रही थी। अपने चेहरे पर नेमुनि की गद्दी हुई आँखें महसूस करते ही स्वर्णलता की आँखें पनीली हो आईं। उसका सिर चकराने लगा और वह खड़ी न रह सकी। नेमुनि ने सहारा देकर उसे कुर्सी पर बिठाया। उसने सिर पीछे कर आँखें कसकर बंद कर लीं। जो वह कभी देखना नहीं चाहती थी, वह दृश्य अब उसका जीवन बन चुका था।

“अभी लाई आपके लिए चाय...” नेमुनि के थके-से कदम रसोई की ओर बढ़ गए।

स्वर्णलेखा की बंद आँखों के पानी में कई स्मृतियाँ तैर गईं। वेदप्रकाश और वह तीनों बेटियों की शादी कर जिम्मेदारियों से गतवर्ष ही मुक्त हुए थे। बेटी को अपने ससुराल में सुखी पाकर वे अब निश्चिंत थे। अतः इस बार एक माह केन्या, युगांडा, तंज़ानिया आदि अफ्रीकी देशों का भ्रमण करने गए थे। केन्या में ही उन्हें ब्लैकवुड से बनी यह मेज़ पसंद आई थी। सोने की-सी कीमत वाली इस मेज़ और दो कुर्सियों का दुबई तक आने का व्यय भी बहुत था। इतनी राशि में ऐसी ही आबनूस की कई मेज़ खरीदी जा सकती थी और अगर अपनी ही फैक्टरी ‘स्वर्णवेद फर्नीचर्स’ से बनवाई जाए तो ऐसी ही नक्काशी भी आधे व्यय में हो जाए, परंतु वेदप्रकाश नहीं माने। समझौता करना उनकी प्रवृत्ति में शामिल न था।

स्वर्णलेखा तब बहुत भड़की थी। काले रंग का फर्नीचर भी कोई रखता है घर में? बाकी का ट्रिप उसने खिन्नता में ही निकाला। परंतु वेदप्रकाश का कहना था - ‘दुबई तो ब्लैक गोल्ड का शहर कहलाता है। तुम्हारा कुंदन-सा बदन इस ब्लैक वुड पर बहुत खिलेगा, देखना तुम!’

वेद के लिए श्रीलंका, इंडोनेशिया से इबोनी काष्ठ दुबई मँगवाना और उसका अपनी पसंद से फर्नीचर बनवाना कोई मुश्किल काम न था, उनका तो व्यापार ही यही था। उनकी यह ज़िद और फिज़ूलखर्ची उसे बिल्कुल रास न आई थी। मालजहाज़ से एक माह बाद वह मेज़ कुर्सी आई तो उसने बेमन से उन्हें गार्डन में रख दिया। परंतु वेद उन्हें गार्डन में पाकर और भी खुश हुए। ऐसी मजबूत लकड़ी ही दुबई के उबलते तापमान में बिना झुलसे अपना ध्वज फहराए रह सकती थी।

धीरे-धीरे स्वर्णलेखा का क्रोध जाता रहा। वह वेद के आने से पूर्व ही नेमुनि को कह मेज़ झाड़-पौछ कर साफ़ करवाती और शाम की चाय की चुस्कियाँ लेते हुए जीवन की दूसरी पारी के आनंद की घड़ियाँ काली मेज़



से उतरतीं और घर भर में डेरा डाल लेतीं। सुबह की चाय और अखबार पढ़ने का ठिकाना भी गार्डन और वह मेज़-कुर्सियाँ हुई।

उसी कुर्सी पर बैठी स्वर्णलेखा का हृदय आज दुःख से चीत्कार रहा था। उसकी आँखें बरसाती पतनाले-सी झर-झर झर रही थीं। वहाँ अकेले बैठ चाय उसके दिल को जलाती थी। नेमुनि चाय ले आई। तभी स्वर्णलेखा का मोबाइल बज उठा।

“हैलो! क्या मैं वेदप्रकाश जी से बात कर सकता हूँ?” उस ओर से आवाज़ आई।

“जी...वेदप्रकाश जी तो...अब नहीं रहे। आप कौन?” स्वर्णलेखा किसी तरह स्वयं को संयत कर पाई थी।

“ओह! बहुत अफ़सोस हुआ जानकर...। पर यह हुआ कैसे? कब हुआ? अचानक...?” प्रश्नों की झड़ी ने स्वर्णलेखा के दुःख को और बढ़ा दिया था।

“आपके पास मेरा नम्बर? ...क्या वेद जी ने दिया था?” उम्मीद की एक किरण स्वर्णलेखा के मन में कौंधी कि हृदयाघात से पहले का दिया हुआ वेद का ही कोई संदेश इन सज्जन के माध्यम से मुझे मिल जाए, जिसे वे यूँ अकस्मात् चले जाने से कह न सके।

“क्षमा कीजिए मैम! मैंने तो वेदप्रकाश जी के नम्बर पर ही फ़ोन मिलाया था।... कोई सेवा हो तो याद कीजिएगा। मैं... ज्ञानदेव...” आगे ज्ञानदेव कुछ कह न सका।

स्वर्णलेखा की भी संज्ञा लौटी। वेद के जाने के बाद उसने स्वयं ही तो उनके मोबाइल का ‘एतिसलात’ सिम अपने मोबाइल के दूसरे सिम स्लॉट में डाल लिया था ताकि वह उन्हें अपने से जुड़ा हुआ महसूस करती रहे। आशा के विपरीत उसके दर्द को सहलाने में यह सिम सर्वथा असफल रही थी। वेद को कभी कॉल करनेवालों को यह बताना कि वे नहीं रहे, उसकी पीड़ा में सुई ही चुभो रहा था। स्वर्णलेखा ने सिम वाली नुकीली सुई से वेदप्रकाश के सिम को निकाल कर मेज़ पर रख दिया।

“बीबी जी! आप अपना जी लगाने को अपना चित्रकारी का काम फिर से क्यों नहीं शुरू करतीं?” नेमुनि, जो पास बैठी सब सुन रही थी, अचानक बोल पड़ी।

“कोशिश की थी नेमु! पर कूची मेरे मनचाहे रंगों को कैनवास पर उतार नहीं पाती। ...या कि यूँ कहूँ कि मरे मन की चाह के रंग कौन-से हैं, अपनी तूलिका को मैं ही समझा नहीं पाती। सब ओर बस काला-सा रंग बिखरा दिखाई देता है।” उसने मेज़ पर उचटती सी निगाह डाली।

अपनी इस बात से स्वर्णलेखा स्वयं हैरान थी कि वह यह सब इस नेपाली वृद्धा को क्यों बता रही है, जिसे चित्रकारी की रत्ती भर भी समझ नहीं है। पर..., वह रंग भले ही न समझती हो, बीस साल से उसके साथ रहते हुए उसे अवश्य समझती है।

“आप बाबू जी के काम सँभालने शुरू कर दीजिए।” वह घर के बड़े-बुजुर्ग की भाँति ही उपदेश दे बैठी।

“हाँ नेमु! फैक्टरी जाना शुरू करूँगी अगले महीने से...” अनमनी यंत्रचालित-सी वह बोल उठी।

नेमुनि इस आश्चर्यस्थि विज्ञप्ति को सुनकर भी आश्चर्य नहीं लग रही थी। वह सिम वाली पिन और सिम उठाकर अंदर ले गई और स्वर्णलेखा अजनबी निगाहों से उसे जाते हुए देखती रही।

स्वर्णलेखा की सोच शून्य में गुम हो गई। तीनों बेटियाँ और दामाद भी तो यही कह रहे हैं। पर क्या यह उसकी उम्र है कि वह व्यापार की ऊँच-नीच समझ ले। फर्नीचर का व्यापार तो बहुत ही भारी काम है। माना कि बचपन में वह मेधावी छात्रा थी, एम.बी.ए. भी किया है किंतु इन सबका उसे अब अभ्यास ही कहाँ है? सोचते हुए उसने चाय का कप प्लेट में रखा और शीशे-सी चिकनी मेज़ की सतह पर धूप की चमक में उभर आई अपनी आकृति को देखा। साठ की उम्र उस आकृति की तो कतई न लगती थी। धूप की दृष्टि तो तथ्यों को स्पष्ट ही दिखाती है, फिर आज यह भ्रमित-सी मनःस्थिति क्यों हो रही है?

काले रंग पर धूल अधिक साफ़ दिखती है कदाचित् इस कारण यह भ्रमजाल पैदा हुआ हो। उसने पुनः झाड़न लिया और मेज़ की सतह झाड़ने लगी। वह जितना झाड़ती, कहीं न कहीं फिर धूल का कोई कतरा उसे व्यथित करने को बैठ जाता। खिन्नता फिर चुभने को चली आई कि इस कारण भी वह काले फर्नीचर के विरोध में थी। फिर अचानक वेद की याद आते ही वह पुनः सीलनभरी आँखों से मेज़ की दराज़ें खोल-खोलकर सफ़ाई में जुट गई। अपने अपराध उनसे क्षमा करा ले रही थी।

उन दराज़ों में उसे वेद के पत्र, डायरी, हिसाब के पर्चे और न जाने क्या-क्या मिला। आज वे दराज़ें श्याम वर्ण के दर्पण बन गईं। ऐसा दर्पण जिनमें वह अपने ही पति के व्यक्तित्व के उस पक्ष को निकटता से देख पा रही थी जो कदाचित् उनके साथ रहते न देख पाई थी। सुयोग्य साथी पर भरोसा निज कर्तव्य पर विश्वास को ऐसे ही दबा देता है जैसे आबनूस का रंग अन्य सारे रंगों को दबा देता है।

बाहर धूप तेज़ हो चुकी थी, आँखें चूँधिया रही थीं। सारे कागज़ लेकर वह भीतर आ गई। कच्चा माल कहाँ-कहाँ से आता है, किस-किस कारीगर को दिया जाता है, घिसाई और पॉलिश का निपुण कौन है और क्या भाव में वह काम करता है। अब तक किस-किस से कितना काम कराया और किस-किस का लेना-देना बाकी है, मैनेजर की तनख्वाह, शोरूम का किराया; सारा हिसाब-किताब तो उनकी डायरी में साफ़-साफ़ लिखा था। 'स्वर्णवेद' फर्नीचर का दुबई के राजमहल से जारी सम्मान-पत्र, शारजाह के विश्वविद्यालय से आया प्रशस्ति-पत्र आदि उनके उच्च कोटि के ग्राहकों की संतुष्टि प्रमाणित करते थे।

वेद पिछले एक वर्ष से सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगे थे। निजी उत्तरदायित्व निभाकर वे सामाजिक उत्तरदायित्व को उन्मुख हुए थे। एक बड़ा कार्टन भरकर पेंसिल नाइजीरिया के लिए, खाली बची हुई कॉपियों के पन्ने सोमालिया भेजने के लिए, पुरानी साड़ियाँ सुडान की महिलाओं के लिए, बिस्कुट के पैकेट श्रीलंका के लिए, सब के बक्से फैक्टरी में रखे हुए थे। पूर्ण लेखा-जोखा इन कुछ पर्चों के काले अक्षरों में दर्ज था।

ये सारे पर्चे उसने करीने से मोड़कर अपने पर्स में रखे और ड्राइंग रूम में रखी अपनी अधूरी पेंटिंग के सामने बैठ गई। कुछ क्षण बाद रंगमिश्रण की पटिया पर लाल, हरे, पीले रंग निकाले, तारपीन का तेल मिलाकर कूची के साथ उनकी संगत बिठाई और सूर्य की प्रत्यावर्तित किरणें बनकर मन-मस्तिष्क के रंग कैनवास पर छितराने लगे।

“बीबी जी! आज पेंटिंग?” नेमुनि अपनी मालकिन की स्फूर्ति और कला को कब से निहार रही थी।

“हाँ नेमु! यह पेंटिंग बनाने को मुझे तुम्हारे साहब ने कहा था। वे इसे भारतीय कोंसुलावास के मुख्य कोंसुल को उनके जन्मदिन पर उपहारस्वरूप देना चाहते थे।”

“कितनी सुंदर है न! बीबी जी! इस पेंटिंग में अँधेरे को चीरकर लौटती हुई रोशनी देख कर लग रहा है कि बाबूजी ही लौट आए हैं।” नेमुनि ताली पीटती-सी उछल रही थी। स्वर्णलेखा अपनी हमउम्र नेमुनि की ऊर्जा देखकर हैरत में थी।

“जा नेमु! सिम डालने की पिन और बाबूजी का सिम तो ले आ।” स्वर्णलेखा का चेहरा उमंग, निश्चय और आत्मविश्वास से दमक रहा था।

“हाँ बीबी जी! इसे डालकर ही रखो दूसरे स्लॉट में।” उसकी खुशी का कारण क्या था, पूछने पर शायद वह स्वयं भी न बता पाती।

“दूसरे नहीं... पहले स्लॉट में...” सिम को अंदर धकेलते ही फ़ोन बज उठा।

“स्वर्णलेखा जी! मैं ज्ञानदेव... कोंसुल जनरल साहब का पी.ए.। क्या आप कल कोंसुलावास आ सकती हैं?... दरअसल बात यह थी कि वेदप्रकाश जी ने जो एक हज़ार दिरहम दिए थे हमें भूमिदेवी को भारत पहुँचाने के लिए, वे लौटाने हैं।” वे सकुचाते हुए बोले।



“लौटाने हैं? मगर क्यों ज्ञानदेव जी? क्या भूमि देवी को कुछ...” किसी वीभत्स अंजाम की कल्पना कर स्वर्णलेखा के शब्द उसके गले में ही फँसकर छटपटाने लगे।

“भूमिदेवी तो उस हादसे में अपंग हो गई थी तो उन्हें पहुँचाने के लिए किसी और को साथ में भारत भेजना था... उसका प्रबंध हम नहीं कर पा रहे हैं। तो बस... इसी लिए... जब कुछ इलाज होगा इस समस्या का तब देखा जाएगा।” ज्ञानदेव का स्वर निराश हो चला था।

“मैं कल आ रही हूँ ज्ञानदेव जी! मुझे कौंसल जनरल को अपनी पेंटिंग भी भेंट करनी है। और... आप भूमिदेवी के साथ मेरी टिकट करा दीजिए। मैं उनके साथ उन्हें उनके गाँव तक छोड़ आऊँगी।” दृढ़ विश्वास से लबरेज थीं स्वर्णलेखा की मुखकांति।

“लेकिन आप... आप स्वयं?” ज्ञानदेव की खुशी आश्चर्य में घुल-मिलकर छलकी।

“आप तैयारी कीजिए। और हाँ! कौंसलावास की ओर से वेद के जिम्मे के कोई काम अधूरे न रहें, इसका जिम्मा मैं लेती हूँ।”

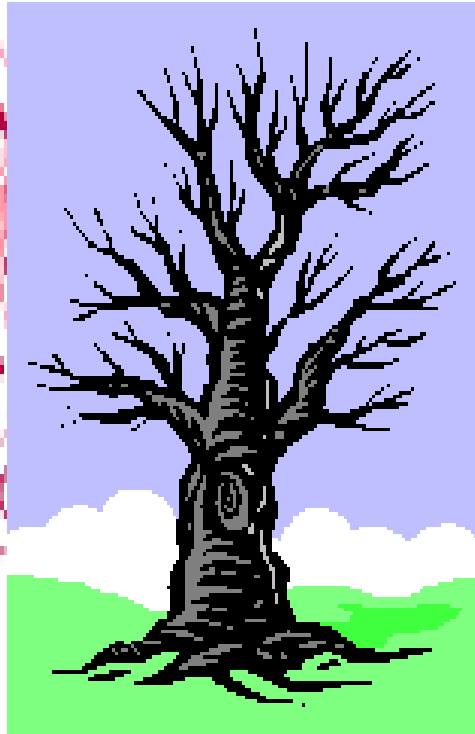
काले रंग के दर्पण ने उसे अपने गंतव्य की दिशा दिखा दी थी। उस राह पर वेद बाँहें फैलाए हुए, मुस्कुराते हुए खड़े थे।



## हमने बसंत के पत्नों को

रेनू यादव

हमने बसंत के पत्नों को पलट कर  
पतझड़ को पढा है  
उड़ा दिया है सारे हरे पत्तों को  
सूखे पत्तों में रंग भरा है  
रसाल मौर से आती खुशबू  
शुष्क तपन में बदल सहा है  
झड़ गए हैं सारे बौर  
टूँठ से प्रेम किया है।





## रक्षामि पर्यावरणम्

रमेश चंद्र

रक्षा करें... ले लें वचन... रक्षामि पर्यावरणम्।  
 पर्यावरण की रक्षा करना, देशवासियो धर्म हो अपना।  
 पर्यावरण की रक्षा के बिन सबका जीवन होगा सपना।  
 जल, थल, नभ को बचा के रखें, इनको न हो कोई भय।  
 अभी चेत जाँँ यदि तो यही समय है सही समय।  
 नहीं देर लगेगी वरना जल, थल, नभ जब आए प्रलय।  
 पर्यावरण की रक्षा को हम सभी बना लें अपना नोशन।  
 रक्षा करें... ले लें वचन... रक्षामि पर्यावरणम्।  
 न वनस्पति तो फूल व फल, न फल तो नहीं सफल जीवन।  
 न पशु निरीह तो दूध-दही, धरती का बिगड़े संतुलन।  
 न जलचर तो आमिष भोजन, न जल तो खनिजों का दोहन।  
 न नभचर तो मनहर कूजन, न नभ तो पल में सौ योजना।  
 रक्षा करें... ले लें वचन... रक्षामि पर्यावरणम्।  
 जड़, चेतन, जल, थल व गगन, मधुर सुहासित अभ्यारण,  
 ऋतु, अवस्था-परिवर्तन, शुभ्र बनाते पर्यावरण।  
 न उद्योग का यह सृजन, न बदले में और वरण।  
 प्रकृति की आओ शरण, खुद जियो, दो नव-जीवन।  
 रक्षा करें... ले लें वचन... रक्षामि पर्यावरणम्।  
 सर्वे भवंतु नहीं सुखिनः, सर्वे संतु नहीं निरामय,  
 न वसुधैव कुटुम्बकम् होगा, न होगा तब सही समय।  
 'नमो मात्रे पृथिव्यै' कहने वाला नहीं बचेगा।  
 निर्जन नहीं, बहार को लाओ, जीवन तभी सफल होगा।  
 कर-कर अथक हाथ से मेहनत, धरती को कर दे पावन।  
 रक्षा करें... ले लें वचन... रक्षामि पर्यावरणम्।  
 कर न दोहन, वन मोहन, न कर शोषण, कर पोषण।  
 किसको करेगा गिला बता, जब रुक जाएगी जग-मोशन?  
 धरा बचाने हेतु हे नर! अब तो कर कोई कोशिश।  
 पछताने से काम चले न, होगी टाँय-टाँय फिर फिश।



हो रही अँधेर, तू देर न कर, जग को अब तो कर दे रोशन।  
रक्षा करें... ले लें वचन... रक्षामि पर्यावरणम्।

गुहार करेगा फिर किससे, जब होंगे खत्म सभी किस्से?  
मनुहार करेगा फिर किसकी, जब होगी हार सभी किसकी?  
तेरी, मेरी, इसकी, उसकी, बात रहे न किसी के वश की।  
यह धरती दुखी-दुखी होगी, न होगी बात किसी रस की।  
जब धरती डोल ही जाएगी, तो बात करेगा किस यश की?  
अविलम्ब अतः हे चेत मनुज, जीवन से न कर तू धावन?  
रक्षा करें... ले लें वचन... रक्षामि पर्यावरणम्।



## दिशाहीन समाज और घटते जीवन-मूल्य

डॉ. मुक्ता

(राष्ट्रपति जी द्वारा हिन्दी सेवी सम्मान से सम्मानित)

दिन-प्रतिदिन समाज में घटित होने वाले हादसों को देख मन उद्वेलित-आहत होता है। दहेज के कारण होने वाली हत्याओं की संख्या में लगातार इज़ाफा हो रहा है...शिक्षित वर्ग भी इससे अछूता नहीं है। कभी गृह-लक्ष्मी की ज़हर देकर हत्या की जाती है; तो कभी बिजली की नंगी तारों द्वारा जला कर; कभी गैस का चूल्हा खुला रह जाने पर; तो कभी नदी किनारे पाँव फिसलने से वह मासूम बलि का बकरा बनती है। आजकल तो तेज़ाब डाल कर ज़िंदा जलाने व ज़हर देकर मारने का प्रचलन ज़ोरों पर है। वैसे मानव नित्य नये प्रयोग करता रहता है। शायद! यह उपाय उसे सबसे सरल भासता है, क्योंकि गला दबाकर हत्या करने के पश्चात् फाँसी पर लटकाने में तो पसीने छूट जाते हैं। वैसे हत्या कर उसे गाड़ी में लाद कर ले जाना और उसे दफ़न करना भी कहाँ सुगम है? हाँ! पहले मिट्टी के तेल का डिब्बा उंडेल कर माचिस की तीली दिखाई जाती थी, परन्तु अब तो पेट्रोल का प्रयोग अधिक कारगर सिद्ध हुआ है।

इक्कीसवीं सदी नवीनता व सुविधा का युग है। हर इंसान कम से कम परिश्रम कर अधिकाधिक धन-संग्रह करना चाहता है। इसलिये वह बीच राह आने वाली बाधाओं के सिर पर पाँव रख कर आगे बढ़ता चला जाता है और किसी के प्राण लेने में लेशमात्र भी गुरेज़ नहीं करता। वह सबको एक आँख से देखता है। सो! वह अपने-पराये में भी भेद नहीं करता। समाजवाद अर्थात् सबको समान दृष्टि से देखना; उसके लिए अच्छे-बुरे का कोई पैमाना नहीं है। वह तो साष्टांग प्रणाम कर सदैव वाहवाही लूटता है और उसके चरणों में नत रहता है। वह भले ही कितने षड्यंत्र रच कर उसकी बखिया उधेड़ रहा हो...उसे हितैषी प्रतीत होता है। सो! विषम परिस्थितियों में जो सच्चे मित्र की भाँति उसका पथ-प्रदर्शन करता है: ग़लत राह पर अग्रसर होने से पूर्व सचेत करता है; परन्तु वह उसे शत्रु सम भासता है। इसलिए उसे समूल नष्ट करने अथवा उसके प्राण लेने में वह तनिक भी गुरेज़ नहीं करता।

जहाँ तक रिश्तों का सम्बन्ध है – पहले गुरुजन व माता-पिता को ब्रह्मा, विष्णु, महेश सम स्वीकार सम्मान प्रदान किया जाता था। इसलिए उनकी ब्रह्म के समान उपासना पर बल दिया जाता था। परन्तु आजकल मान्यताएँ बदल गई हैं। न तो पहले जैसे गुरुवर दिखाई पड़ते हैं, जो गुरुकुल आश्रम में अपने शिष्यों को रख कर शिक्षा दिया करते थे। इतना ही नहीं, माता-पिता व बच्चों के सम्बन्ध भी सौहार्द्रपूर्ण नहीं रहे हैं। आजकल शिक्षा का व्यापारीकरण हो रहा है...गुरु केवल धन कमाने का साधन-मात्र बन कर रह गये हैं। ट्यूशन का बढ़ता प्रचलन आजकल सम्मान-सूचक हो गया है। इसलिए जो जितने अधिक बच्चों को ट्यूशन की ओर आकृष्ट करने में समर्थ होता है; वह उतना ही बुद्धिमान व महान् कहलाता है।



प्राचीन काल में गुरुजन आदर्श होते थे और बच्चे उनका अनुकरण कर वैसा ही बनने का स्वप्न देखा करते थे। परन्तु आजकल तो वे राजनीतिज्ञों के आश्रय में पनाह पाकर स्वयं को सौभाग्यशाली समझते हैं तथा अपने भाग्य पर इतराते हैं। वे घर बैठे तनख्वाह पाने में दक्षता हासिल कर फूले नहीं समाते। हाँ! सिगरेट व शराब का प्रचलन तो आजकल सामान्य हो गया है तथा उनके चंगुल में फंसे अधिकांश शिक्षक अपनी सीमाओं का अतिक्रमण कर, मर्यादा की सीमाओं को लाँघ नादान बच्चियों के साथ छेड़छाड़ कर ही संतोष नहीं पाते बल्कि दुष्कर्म के हादसों को अंजाम दे डालते हैं, जिसका प्रमाण हमें मीडिया व समाचार-पत्रों के माध्यम से प्रतिदिन प्राप्त होता रहता है। मीडिया भी दिन-भर ऐसी खबरों को प्रकाशित कर अपनी टी•आर•पी• बढ़ाता है। काश! वे ऐसी घटनाओं को बार-बार दिखाने से गुरेज़ करते; तो मासूम बच्चियाँ, अश्लील वीडियो अपलोड करने की धमकियों से अपना बचाव कर पातीं और समाज में चर्चा का मुद्दा नहीं बनतीं।

एकतरफ़ा प्यार का अंजाम गली-चौराहों पर तेज़ाब डालकर जला डालने, तलवार लहराते हुए अपहरण करने या गोलियों से भून डालने के रूप में परिलक्षित है। परन्तु क्या होता है इसका अंजाम...शिकार तो मासूम बच्चियाँ ही होती हैं। यदि वे भ्रूण रूप में अपनी जिजीविषा से किसी प्रकार बच निकलती हैं, तो स्कूल-कॉलेज तक पहुँचने से पहले अपनों की हवस का शिकार हो चुकी होती हैं; कभी तथाकथित सफ़ेदपोश, मुखौटाधारी लोगों व कभी दबंगों की वासना-भरी दृष्टि अर्थात् उनके कोप का भाजन बन चुकी होती हैं ...और यह सिलसिला निरंतर चलता रहता है।

विवाहोपरांत यदि वर पक्ष के लोग सहज होते हैं, तो वे स्वयं को सुरक्षित अनुभव करती हैं। परन्तु हर दिन उन्हें उपेक्षा, अवमानना, तिरस्कार व प्रताड़ना के दंश सहन करने पड़ते हैं और उन्हें दोगुना दर्जे का प्राणी समझा जाता है। यदि वे कठपुतली की भाँति उनके इशारों पर नाचती हैं; आदेशों की अनुपालना तत्परता से करती हैं; तो उन्हें करुणावश एक छत के नीचे रहने का अधिकार प्रदान किया जाता है, अन्यथा लांछन लगाकर खाली बोतल की भाँति बीच सड़क फेंक देने का प्रचलन सदियों से सामान्य रूप से चला आ रहा है। आजीवन रास्ते के पत्थर की भाँति ठोकरें खाना उनकी नियति व जीवन की हकीकत बन कर रह जाती है। आजकल फ़िरौती व अपहरण के किस्से आम हो चले हैं। छोटी आयु के बच्चों को मार कर, उनके अंग -प्रत्यंग बेचने का धंधा भी आजकल चरम शिखर पर है। पहले यह उन्हें अपाहिज बना, भीख मँगवाने तक ही सीमित था। नौकरी के बहाने मासूम लड़कियों को बहला-फुसला कर उनके साथ घटित होते दुष्कर्म के हादसों को देख हृदय का उद्वेलित हो जाना स्वाभाविक है। यह चिंतन-योग्य गम्भीर विषय है कि वे लड़कियाँ उन शोहदों के झाँसे में आकर अपना अनमोल जीवन दाँव पर क्यों लगा देती हैं?...और अंततः महफ़िलों की शोभा बनने पर विवश कर दी जाती हैं।

आइए! रुख करते हैं, उन विवाहित महिलाओं की ओर, जिनकी अस्मत् उनके पति के सम्मुख लूट ली जाती है। सामूहिक दुष्कर्म की शिकार युवती क्षुधा शांत करने का उपादान-मात्र बन कर रह जाती है। लाख कोशिश करने पर भी उसकी रक्षा करने का साहस कोई भी नहीं जुटा पाता। आजकल तो दो वर्ष की बच्ची से





लेकर नब्बे वर्ष की वृद्धा तक भी सुरक्षित नहीं है। उनकी दृष्टि में समानता के भाव का अर्थ सबको उपभोग की वस्तु स्वीकारना है। दूषित मनोवृत्ति के लोग सबको एक नज़र से देखते हैं। काश! वे माँ, बहन, बेटी में अंतर समझ रिश्तों को गरिमा व अहमियत दे पाते, तो समाज में सौहार्दपूर्ण वातावरण व्याप्त रहता। 'गाँव की बेटी सबकी बेटी' की कहावत चरितार्थ होती।

आओ! लौट चलें अतीत की ओर – जब बहन-बेटी ही नहीं, हर महिला सुरक्षित थी। भाभी को माँ का दर्जा दिया जाता था। महिलाएँ बुजुर्गों का सामना नहीं; सम्मान करती थीं। आधुनिक युग में युवा पीढ़ी के लिए सर्वाधिक कारगर उपाय है – अपनी भावनाओं पर अंकुश लगाना। अपनी संस्कृति से जुड़ाव व स्वीकार्यता भाव से मानव-मात्र में यथोचित बहन, बेटी, माँ के प्रतिरूप का दर्शन करने की भावना जाग्रत होगी। यदि युवा-वर्ग सुसंस्कारित होगा; अपनी संस्कृति व मानव-मूल्यों के प्रति समर्पित होगा तो समाज में ऐसे हादसे घटित नहीं होंगे और अपराध-मुक्त, सुंदर व स्वस्थ समाज की संरचना होगी।

## चीखता मौन

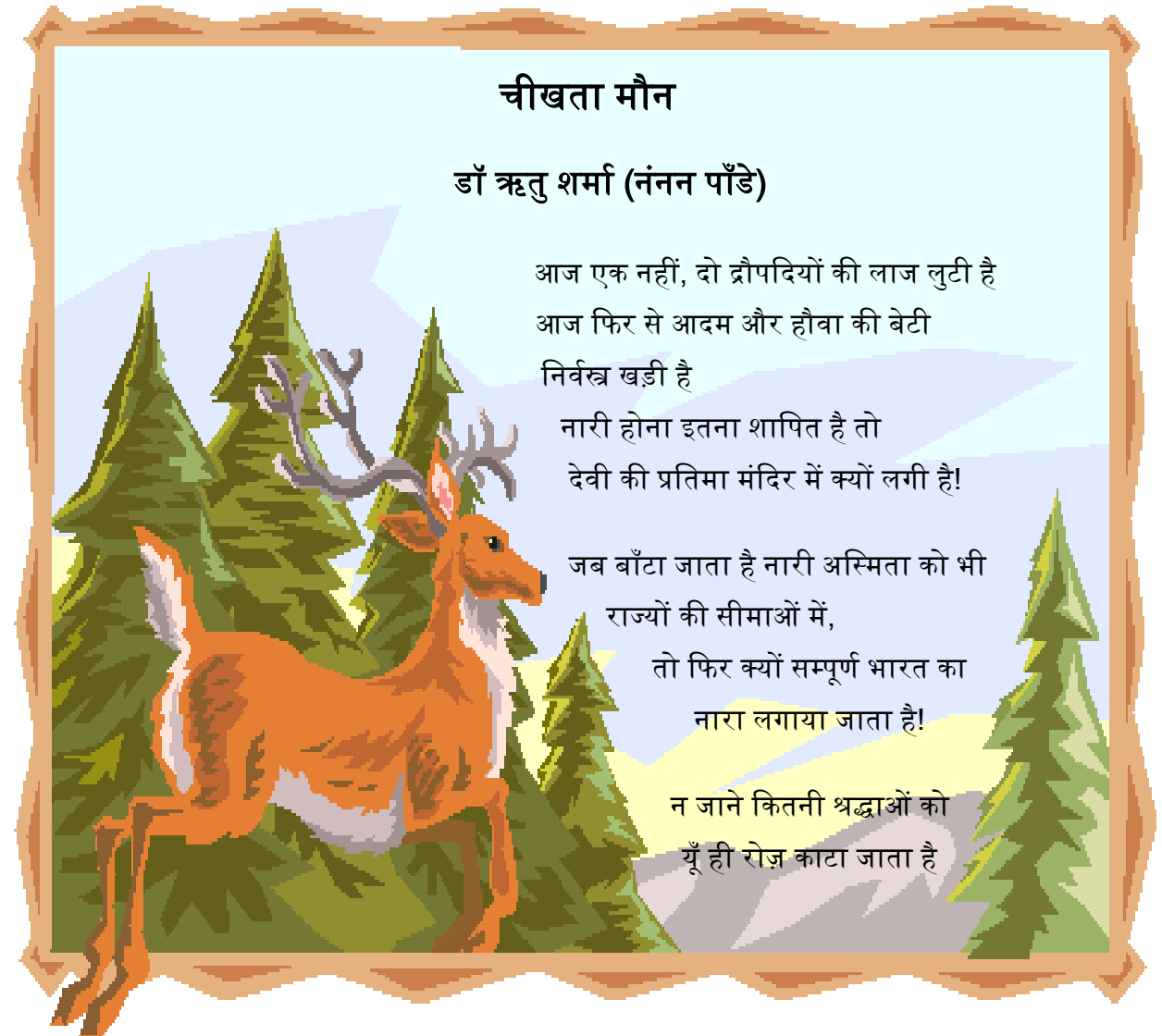
डॉ ऋतु शर्मा (ननन पाँडे)

आज एक नहीं, दो द्रौपदियों की लाज लुटी है  
आज फिर से आदम और हौवा की बेटी  
निर्वस्त्र खड़ी है

नारी होना इतना शापित है तो  
देवी की प्रतिमा मंदिर में क्यों लगी है!

जब बाँटा जाता है नारी अस्मिता को भी  
राज्यों की सीमाओं में,  
तो फिर क्यों सम्पूर्ण भारत का  
नारा लगाया जाता है!

न जाने कितनी श्रद्धाओं को  
यूँ ही रोज़ काटा जाता है



कितनी ही वामाओं को यूँ  
निर्वस्त्र घुमाया जाता है  
क्या पुरुष के पौरुष को  
केवल इसी से तौला जाता है!

क्या नहीं ये किसी की बेटी,  
किसी की बहन, किसी की माँएँ हैं?  
फिर क्यों सब निशब्द बन कर  
मौन को अपनाए हैं ?  
आवाज़ नहीं तो कलम उठाओ  
इतिहास को तुम फिर न दोहराओ।

सत्ताधारी जब सत्ता के  
मद में बौराता है  
किसी एक का नहीं वो  
सम्पूर्ण मानवता का नाश  
कर जाता है।

एक अबला की हाय ने  
ध्वंस कर दिया था इन्द्रप्रस्थ  
अम्बा के प्रतिशोध की प्रतिज्ञा से  
बाणों की शय्या पर सो गया था देव व्रत।

नारी अब तुम ही नारी के लिए  
आवाज़ उठाओ  
चंडी बन रण में आओ  
मौन नहीं शस्त्र उठाओ  
दुर्योधनों को मार गिराओ।



मैं नारी हूँ

डॉ. पूजा अलापुरिया 'हेमाक्ष'

मैं नारी हूँ  
सिर्फ नारी हूँ  
मत बाँधो मुझको  
त्याग, समर्पण और  
मान-मर्यादा  
की मूरत में  
हाँ, मैं नारी हूँ.

मैं शक्ति हूँ  
मैं दुर्गा हूँ  
मैं राधा  
और मीरा हूँ  
मत बाँधो मुझको  
सभ्यता और संस्कृति की आड़ में  
हाँ, मैं नारी हूँ.

मैं आस हूँ  
मैं विश्वास हूँ  
मैं सूक्ष्म हूँ  
मैं व्यापक हूँ  
मैं अपनी ही नहीं  
तुम्हारी भी पहचान हूँ  
हाँ, मैं नारी हूँ.







मैं कल्पना हूँ  
मैं उम्मीद हूँ  
मैं उड़ान हूँ  
मैं धरा  
और आसमान हूँ  
मत कतरो मेरे पंखों को  
छू लेने दो उन बुलंदियों को  
जो चाहती हूँ मैं पाना  
मैं नारी हूँ  
हाँ, सिर्फ नारी हूँ।

मैं तरल हूँ  
मैं जड़ हूँ  
मैं सरिता  
और समुद्र हूँ  
बह लेने दो अब  
मत रोको मेरी धारा को  
मैं नारी हूँ  
हाँ, मैं नारी हूँ।

मैं पूजा हूँ  
मैं अर्चना हूँ  
मैं उपासना  
और आराधना हूँ  
आस्था का दीप जलाओ  
मत गढ़ो मुझे धर्म की परिभाषा में  
मैं नारी हूँ  
हाँ, सिर्फ नारी हूँ।



मृत्यु जब मेरे सिरहाने खड़ी होगी...

देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

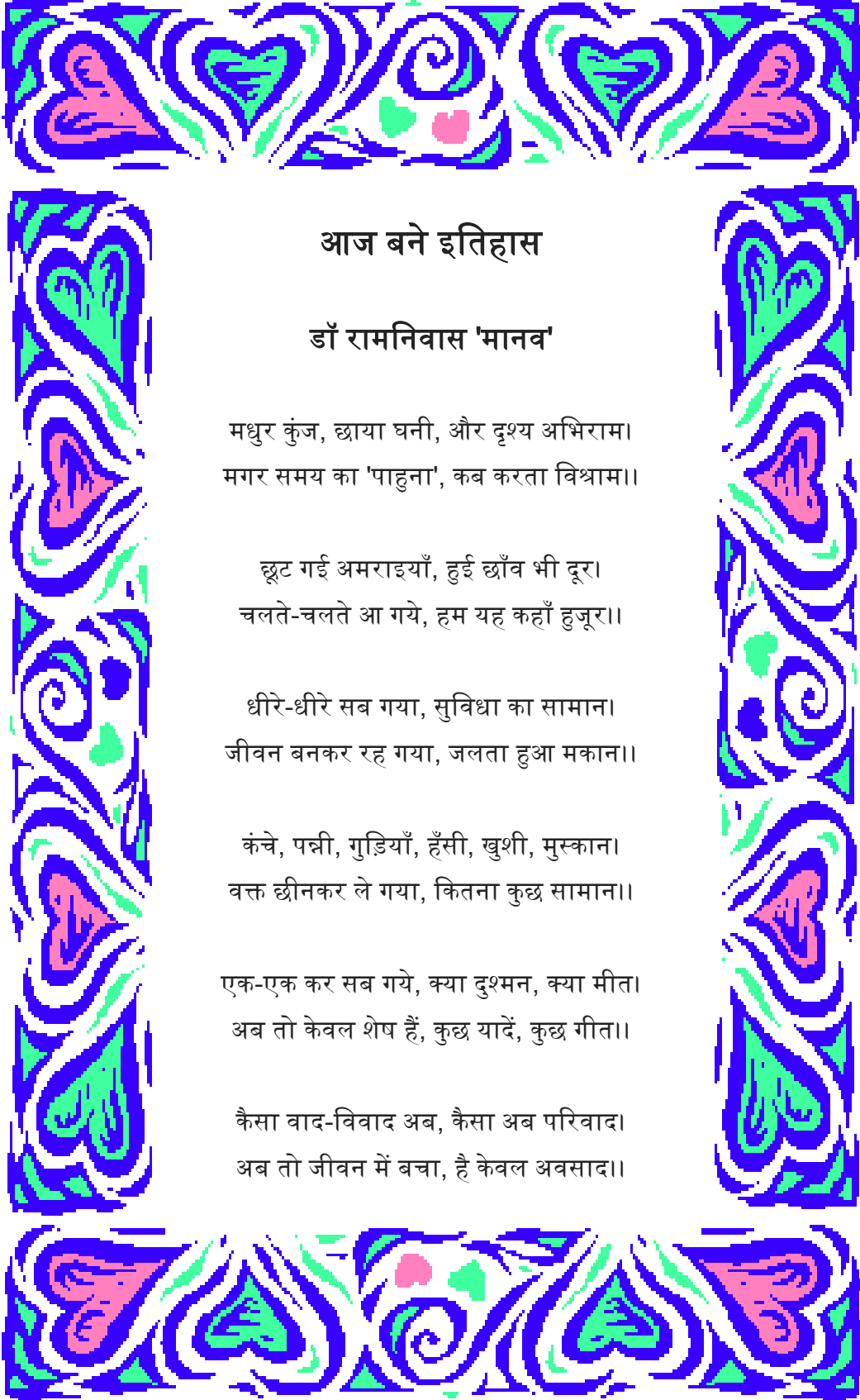
जब किसी दिन मृत्यु मेरे सिरहाने खड़ी होगी  
मुझे वास्तव में डरा रही होगी  
अपने साथ ले जाने के लिए उतावली होगी  
उससे मैं कुछ पल जीवन जीने के लिए मागूँगा  
अपनी कविताओं को सुनाने की, मृत्यु से,  
मैं फरियाद करूँगा।

रात-रात भर जाग कर जो मैंने कहानियाँ लिखी हैं  
उन कहानियों में मानवीय सम्वेदना और मूल्यों को  
पढ़ने में पाठकों को दिखी हैं  
ऐसी एकाध कहानी मृत्यु को  
मैं पढ़कर सुनाऊँगा  
व्यथित जनों की पुकार  
शोषण और इंसान पर हो रहे अत्याचार  
धन-दौलत से मनुष्य में हो रहा अहंकार  
ऐसी कई बातों को बताऊँगा  
अपनी आधी अधूरी प्रकाशित होने वाली  
कृति को दिखाऊँगा  
साहित्यकारों का साहित्य के प्रति  
निष्ठा और समर्पण मृत्यु को समझाऊँगा...



अभी और जीवित रहने की मेरी है मजबूरी  
 अभी हमें जिंदगी से न बनाना है दूरी  
 उसके हृदय को प्रेम की सुंदर कविताओं  
 को सुना कर पिघलाऊँगा  
 मेरे सृजन किए गए साहित्य का महत्व  
 जब मृत्यु के समझ में आएगा  
 उसे लगेगा कि अभी मेरा जीवित रहना  
 वास्तव में बहुत जरूरी है  
 मुझसे निश्चित प्रसन्न हो जाएगा  
 और मुझे विश्वास और मन में आस है कि मृत्यु  
 मेरे आधे-अधूरे सृजन को पूरा करने के लिए  
 मुझे कुछ वर्षों के लिए जीवित छोड़ कर लौट जाएगा...





आज बने इतिहास

डॉ रामनिवास 'मानव'

मधुर कुंज, छाया घनी, और दृश्य अभिराम।  
मगर समय का 'पाहुना', कब करता विश्राम॥

छूट गई अमराइयाँ, हुई छाँव भी दूर।  
चलते-चलते आ गये, हम यह कहाँ हुजूर॥

धीरे-धीरे सब गया, सुविधा का सामान।  
जीवन बनकर रह गया, जलता हुआ मकान॥

कंचे, पत्नी, गुड़ियाँ, हँसी, खुशी, मुस्कान।  
वक्त छीनकर ले गया, कितना कुछ सामान॥

एक-एक कर सब गये, क्या दुश्मन, क्या मीत।  
अब तो केवल शेष हैं, कुछ यादें, कुछ गीत॥

कैसा वाद-विवाद अब, कैसा अब परिवाद।  
अब तो जीवन में बचा, है केवल अवसाद॥





गया, देखते सब गया, हास, लास, उल्लास।  
कल तक हम भूगोल थे, आज बने इतिहास॥

चाहत के फीके हुए, चटक चुटीले रंग।  
इसीलिए लगने लगे, सारे ढंग कुढंग॥

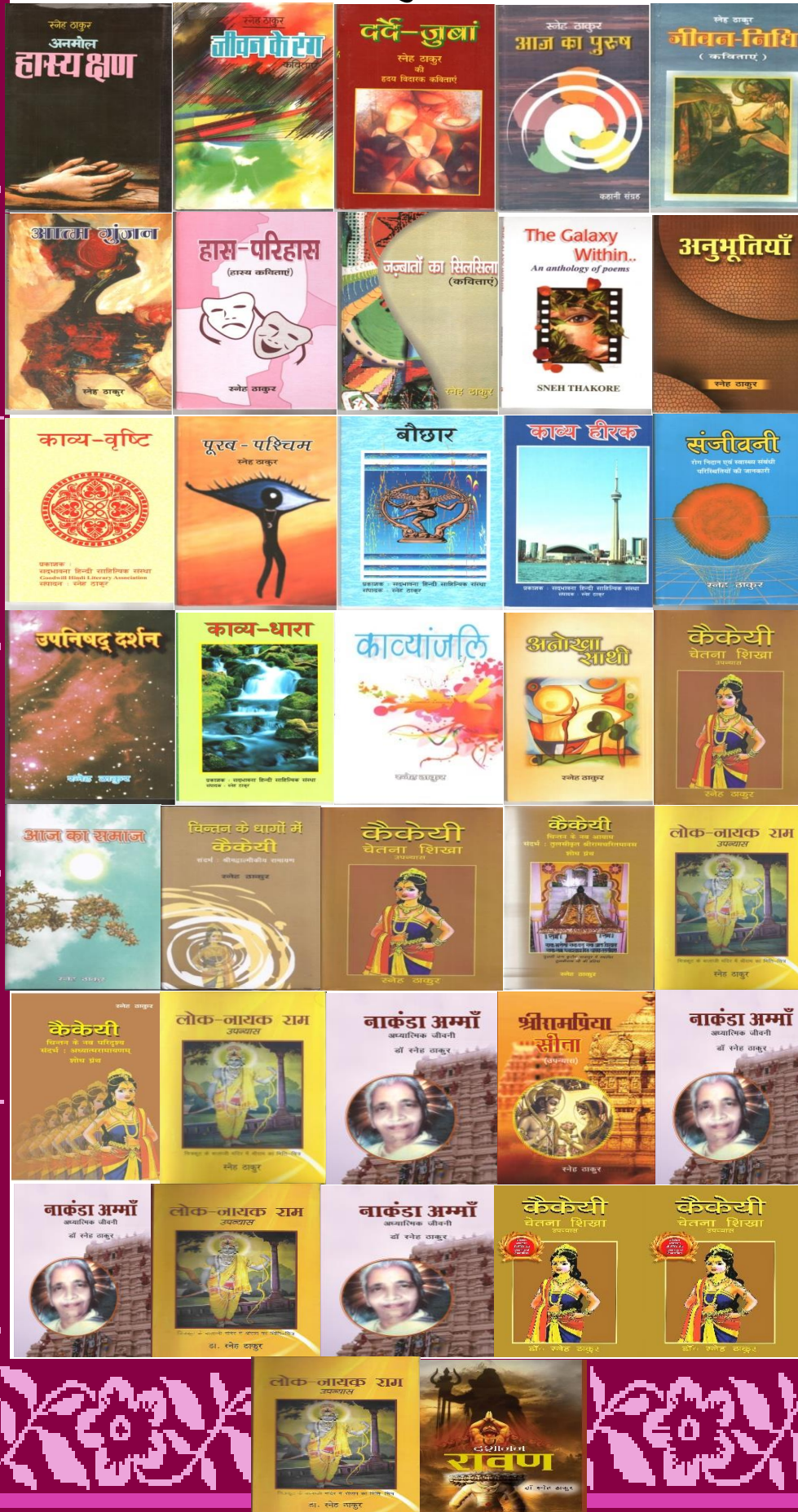
कोई कहे रखैल है, कोई समझे सौत।  
जीवन की अर्धांगिनी, लगे मुझे तो मौत॥

सीता-सी संवेदना, व्याकुल और उदास।  
मन बैरागी राम-सा, जीवन है वनवास॥





## डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार





## डॉ. स्नेह ठाकुर की प्रकाशित पुस्तकें

दशानन रावण	( उपन्यास )
लोक-नायक राम	( उपन्यास, चतुर्थ संस्करण )
कैकेयी : चेतना-शिखा	( उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, चतुर्थ संस्करण )
कैकेयी : चेतना-शिखा	( उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, तृतीय संस्करण )
नाकंडा अम्माँ	( अध्यात्मिक जीवनी, चतुर्थ संस्करण )
लोक-नायक राम	( उपन्यास, तृतीय संस्करण )
नाकंडा अम्माँ	( अध्यात्मिक जीवनी, तृतीय संस्करण )
नाकंडा अम्माँ	( अध्यात्मिक जीवनी, द्वितीय संस्करण )
श्रीरामप्रिया सीता	( उपन्यास )
नाकंडा अम्माँ	( अध्यात्मिक जीवनी )
लोक-नायक राम	( उपन्यास, द्वितीय संस्करण )
कैकेयी : चिन्तन के नव परिदृश्य - संदर्भ : अध्यात्मरामायण ( शोध-ग्रन्थ )	
लोक-नायक राम	( उपन्यास )
कैकेयी : चिन्तन के नव आयाम - संदर्भ : तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस ( शोध-ग्रन्थ )	
कैकेयी : चेतना-शिखा	( उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, द्वितीय संस्करण )
चिन्तन के धागों में कैकेयी - संदर्भ : श्रीमदवाल्मीकीय रामायण (शोध-ग्रन्थ)	
आज का समाज	( सामाजिक लेख-संग्रह )
कैकेयी : चेतना-शिखा	( उपन्यास, राष्ट्रपति भवन पुस्तकालय में संग्रहित )
अनोखा साथी	( कहानी-संग्रह )
काव्यांजलि	( काव्य-संग्रह )
काव्य-धारा	( संकलन, संपादन एवं प्रकाशन )
उपनिषद् दर्शन	( दार्शनिक एवं अध्यात्मिक )
संजीवनी	( स्वास्थ्य सम्बन्धी आलेख )
काव्य हीरक	( संकलन, संपादन एवं प्रकाशन )
बौछार	( संकलन, संपादन एवं प्रकाशन )
पूरब-पश्चिम	( आप्रवासी सम्बन्धित आलेख संग्रह )
काव्य-वृष्टि	( संकलन, संपादन एवं प्रकाशन )
अनुभूतियाँ	( काव्य-संग्रह )
The Galaxy Within	( A collection of English poems )
ज़ुबानों का सिलसिला	( काव्य-संग्रह )
हास-परिहास	( हास्य कविताएँ )
आत्म-गुंजन	( अध्यात्मिक-दार्शनिक गीत )
जीवन-निधि	( काव्य-संग्रह )
आज का पुरुष	( कहानी-संग्रह )
दर्द-जुबाँ	( नज़्म व ग़ज़ल संग्रह )
जीवन के रंग	( काव्य-संग्रह )
अनमोल हास्य क्षण	( नाटक-संग्रह, फेडरल गवर्नमेन्ट, कैनेडा द्वारा अधिकतम अनुदान से सम्मानित )

### प्रकाशक व वितरक

स्टार पब्लिकेशंस (प्रा.) लि., ४५ बी., आसफ अली रोड, नई दिल्ली - ११०००२, भारत  
 Star Publishers' Distributors, 55, Warren Street, LONDON - W1T 5NW, England  
 दिल्ली प्रेस की सरिता व अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित